

सदाधरार, सुरक्षित

श्री सहजानन्द शास्त्रमाला
(६)

समस्थानसूत्रविषयदर्पण

लेखक —

आचार्यमित्र सन्त, शास्त्रमूर्ति, न्यायतीर्थ, पूज्य श्री १०५ लुप्तक
वर्णी मनोहर जी 'सहजानन्द' महाराज

सम्पादक —

रत्नलाल जैन एम० बी०

मेरठ सदर

प्रकाशक —

मन्त्री, श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

वि० सं० २०११ } चोर निर्माण सं० २४८० [ई० १६२४
प्रथम संस्करण } [मूल्य ॥८०]

इस पुस्तक की १० प्रति खरीदने पर १ प्रति बिना मूल्य

श्री 'सहजानन्द शास्त्रमाला के प्रवर्तकों की

शुभ 'नामावलि

- १ • श्रीमान ला० महाशयप्रसाद जी जैन बैरवा सर मेर १००१)
- २ • श्री० मित्रसेन नारायण जी जैन मुजफ्फर नगर १००१)
- ३ • श्री० प्रेमचंद श्यामप्रकाश जी जैन प्रमपुरी मेरठ १००१)
- ४ • श्री० सनगरचंद लालच जी जैन मुजफ्फरनगर ११०१)
- ५ • श्री० सेठ शीललाल जी जैन सदर मेरठ १००१)
- ६ • श्री० कृष्णचन्द जी जैन राईस देहरादून ११०१)
- ७ • श्री० दाशबंद जी जैन राईस देहरादून १००१)
- ८ • श्री० बरुमच प्रमचन्द जी जैन राईस मण्डी ११०१)
- ९ • श्री० बाबुराम गुरा ज्ञान जी जैन जालापुर १००१)
- १० • श्री० कचनराम उपमैन जी जैन जगाधी १००१)
- ११ • श्री० जिनरदरलाल श्रीधर जी जैन शिमला १००१)
- १२ • श्री० बाबाजीलाल नरबन जी जैन शिमला १००१)
- १३ • श्री० सेठ दानजलाल दाहूसा जी जैन सना द १००१)
- १४ • श्री० बाबुराम अकलकप्रसाद जी जैन राईस तिमना १००१)
- १५ • श्री० मुकंदलाल गुलशनराय जी जैन नर नगर

मुजफ्फरनगर १००१

- १६ • श्री० ला० मुखरीरसिंह हमचंद जी जैन सराफ बकोत १००१)
- १७ • श्री० सेठ मोहनलाल ताराचंद जी जैन बड़ाना अण्णपुर १००१)
- १८ • श्री० भवजीलाल श्री कोडरमा १००१)
- १९ • श्री० कैलाशचंद जी देहरादून १००१)

इस विह्वलने सन्तों का पुन रूपका कागजमें जमा है।

समस्थानसूत्रविषयदर्पण

भगलाचरणम्

सहजानन्दमम्पन्नमर नत्वा शिष्य ममम् ।
समस्थानगसूत्राणा न्यम्यन्ते निषया व्रमे ॥१॥

अध्याय-सूत्र

मर्षके अर्द्धं तमा वर्णन	१-१
उमका हेतु	१-२
द्वितीय हेतु	१-३
मग्नदृष्टिसे वर्णन	१-४
उमका हेतु	१-५
नैगमदृष्टिमे वर्णन	१-६
उमका हेतु	१-७
परमभावसे वर्णन	१-८
उमका हेतु	१-९
उम हेतुसे निर्णय	१-१०
हेतुपूर्वक ममर्थन	१-११
इम निर्णीति अग्रस्थानी अशक्यता	१-१२
उमका हेतु	१-१३
परिभाषणका फल	१-१४

व्यवहारमे मेदप्रपणा	१ १५
उमके प्रयोजन	१-१६
प्रयोजनोरा स्पर्शरस	१-१७
धर्मध्यानरा प्रयोजन	१-१८
मत्तममृदि	१-१९
उमरा अभिन्नराग	१ २०

द्वितीय अध्याय

अशिक्षितर हेन्गमान	२-११५
अग्निहायिक	२-१४६
अग्निहायिक	२ १६३
अशानिया कर्म	२-१२०
अज्ञान्यज्ञानव्यापारर भावपर विरन्ध	२-३७१
अजीमद्रथ	२-३१६
अतिकायव्यन्तरेन्द्रकी वन्तमिरा	२-२०१
अतिकायकी गगिरामद्वारा	२ २१७
अर्द्ध तत्त्वपरके तण्डर विरन्ध	२ ४१४
अध्ययमान	२-२८३
अध्ययमान	२-२८४
अन्यधानुपपद्यमानन्यागमरी मभायना	२ ४२४
अन्यधानुपपद्यमानन्यागमरा प्रमाणान्तरम अरगन मानने	
पर तण्डर विरन्ध	२ ४२५

अनशन	२-३६७
अनवरात्मक श्रुतज्ञान	७-१६०
अनादिमम्बद्धशरीर	२-१५०
अनिवृत्तिस्वरणगुणस्थानवर्ती	२-८६
अनुपलब्धि हेतु	२-३५२
अनुपस्थान	२-१७४
अनुमानसो अप्रमाणमाननेपर स० वि०	२ ४२२
अनुमान	२ ११४
अनुमानसो गौणताके हेतु अप्रमाव मानने पर स०	२-४२१
अनुमानाद्ग	२ १७३
अनुस्नान	२ १७५
अनैरान्तिर हेतुमाय	२ ४०७
अप्रत्यारयान	७ २८२
अप्रतिक्रमण	२ २८१
अप्रतिगतशरीर	२-१४६
अप्रमत्त	७ ८१
अप्रशस्तेनिदान	२-१७६
अपर्याप्त नारक	७ ४७२
अपूर्वस्वरणगुणस्थानवर्ती	२ ८५
अपूर्वस्वरण प्रथम भागवध व्युत्पत्ति	२ २६२
अमापात्मक शब्द	२ १७६

अभियट दोष	२-१८४
अभेदब्रह्ममिद्विके कारण पर निम्न	२-३८८
अयन	२ ३३६
अर्थापत्तिप्रमाणान्तर माननेपर सटक	२ ४२३
अथज्ञप्तिसे अस्ममिदितान मिद्वि माननेपर स०	२ ४१६
अर्थ	२-३१६
अस्तिद्वि	२ ३४६
अव्योगादोत्तर प्रकृति रघ	२ ४४८
अग्रह	२-१११
अधिमान	२-१०
अधिमान	२-१७
अभिचार भक्त प्रत्याख्यान	२-२६८
अभिनामान	२-३४१
अभिरति	२ ११०
अशुचित्	२-११८
अशुद्धोपयोग	२ १०३
अशुभमनोयोग	२-२६७
अस्मदिके ज्ञानप्रो ज्ञानातरवद्यमाननेपर स०	२ ४३३
अमद्भूतव्यवहार	२-२७८
असिद्धहेत्याभास	२-३६५
अमनिपञ्चेन्द्रियजीरसभास	२-८५७

अहिंसा		४५१
अदीर्घऋद्धि	१ ५३	०-६४
अज्ञानचेतना	१ १	३८०
आशाश	१-३५	०६४
आत्मा व ज्ञानक अप्रतीयमान माननपर ति	१-३७	२३६
आद्यद्वीपसमुद्राधीश	१-३५	०३७
आदिमत्परिणाम	१ ३	११७
आभ्यन्तरहेतु	१-३७	११८
आपु	१	२-४६
आर्य	१-३५	३४६
आश्रम	१-३५	४७
आत्मगिरिगण	१ ६	६
आहारकद्विज	२६७	०
आहारकमार्गण	२ १५१	१
इन्द्रिय	२-६३	
इन्द्रियवृत्तिही प्रमाणतापर गित	२-३७०	३
इश्वरम नियतानन्दय माननेपर वृ	० २२६	१
ईश्वरका वह द्वितीयज्ञान माननपर	०-४३०	
उत्कृष्ट आपुममान	२ ४७५	
उत्कृष्ट श्रमक		

उत्तरप्रकृतिर्वच	७ ४४०
उद्दिष्टन्यासीश्रामरु	७ ३६
उदय	७ १४३
उदयप्रकृति	७-७६५
उपचरितस्वभावा	७ २६०
उपनयामास	७ ४४५
उपयोग	७ ६
उपलब्धिहेतु	७ ३५३
उपशम	७ ३५४
उपशममप्यक्त	७ ८२
उपशमश्रेणियोगी	७ ८४
उपशान्तमोदम उदयवृत्ति	२ २६३
ध्वजुमिपुलमनिम निशेफ	२ ३३७
ध्वजुमूर	७ २८६
एरदिशिकममुद्रान	७ ३६४
एरान्त	२ १३०
एरुदशामिन्द्र	२ १८५
एकापलम्भरु मण्डरु निरुण	२ ४१७
ओजराशि	१७ ७६३
थौदारिकदिक	७ ६८
थौदारिकापयोग	७-४५०

ओदारिकमिश्रमाययोगी	२ ४५१
ओपशमिकुमार	२-२४
क्रिया	२ ३८०
क्रिया अद्भि	२-२६४
कदम्बपातालपाश्वर्तपिपेत	२ २३६
कदम्बपातालपाश्वर्त पत निरामा दय	२ २३७
कर्म	२ ११७
कर्म	२ ११८
कर्म	२-४६
कर्म	२-३४६
कर्म	२ ३४७
कर्मभूमिजनर	२-२६
करणकृति	२ ३६०
कल्पपाश	२ १३६
काम	२-३३०
कर्माणिमाययोगी	२-४५४
कर्माणिशरीरिणी मूलकरणकृति	२ ३६०
कायत्याग	२ ३६६
कारक	२ ३१०
कारण	२ ४१०
काल	२ ३०

कालभूतेन्द्र की गणिसामहत्तरी	२-२२६
कालभूतेन्द्र की उल्लभिसा	२-२१०
कालादधिममुद्रके अशीशदेव	२ २४४
किंपुरुषव्यन्तरेन्द्र की गणिसामहत्तरी	२-२१२
किंपुरुषव्यन्तरेन्द्र की उल्लभिसा	२-१६६
किन्नाटव्यन्तरेन्द्र की गणिसामहत्तरी	२-२१३
किन्नाटव्यन्तरेन्द्र की उल्लभिसा	२-१६७
कुमतिवान	२ ४५५
कुश्रुतनानी	२-४५६
केवली	२-५०५
गंध	२ १०५
गीतरतिगन्धर्वेन्द्र की गणिसामहत्तरी	२-२१८
गीतरतिगन्धर्वेन्द्र की उल्लभिसा	२ २०२
गीतयशगन्धर्वेन्द्र की गणिसामहत्तरी	२-२१६
गीतयशगन्धर्वेन्द्र की उल्लभिसा	२-२-३
गुण	२-३०
गुणपर्याय	२-१८६
गोत्र	२-७५
घृतपरद्वीपाधीश	२-११६
घृतपरममुद्राधीश	२-२५२
प्रतियार्म	२-११६

चतुरिन्द्रियजीवसमास	२-१५४
चारित्र	२-२७
चारित्र	२-१८६
चारित्रार्थ	२-२२६
चेतना	७-१२८
चौधे नरकम सम्यग्दृष्टि	७ ४६६
छट नरकम सम्यग्दृष्टि	२-४६८
छाया	२-३२१
जगतके शब्दमयत्वके कारणपर वि०	२-३८७
जघन्यभोगभूमि	२-२३१
जडप्रतिभासायोगके लङ्कामिच्छन्	२-४१३
जडताके ही प्रतिभास माननेपर मिच्छन्	२ ४३८
जन्य अक्रियात्मक ज्ञातव्यापारपर विच्छन्	२-३७७
जलवायिक	२-१४५
जलवायिक	२ १६२
जिन	२-४२०
जिनमिच्छ	२ ४०२
जीव	२ ३
जीवपरिणति	२ ६६
जीवसमास	२-२७१
जीव्यमास	२-२७७

जीवाजीवध	२-३१६
त्याग	२-१४१
तीन्द्रियजीवसमाम	२ १५३
तद्व्यतिरिक्त नोत्थागमद्रव्य	२-२६०
तप	७ १३८
तिर्यग्विद्वक	७-१०६
तृतीयनररुमे सम्यग्दृष्टि	२ ४६५
तैजमद्विक	२-१००
तैजसशरीरकीमूलररणकृति	२-३६६
द्रव्यकृति	७-३८६
द्रव्यजिन	७-३६४
द्रव्यनैगम	२-४४३
द्रव्यपरिवर्तन	२ ६०
द्रव्यनिक्षेपरूपकर्म	२ ७५६
द्रव्यममान	२ ४७५
द्रव्यार्थिकनय	७ ६७
द्वयस्तरमत्र	२ ३५५
"	२-३५६
"	२ ३५७
"	२-३५८
द्वितीयनररुमे सम्यग्दृष्टि	२ ५६४

द्वीन्द्रिय जीवममाम	२-१५२'
दर्शन	०-१८
दर्शनमालमरण	२ २६६
दर्शनावरणोदयम्वान	२-२६६
दर्शनमोहसीमर्षघाती प्रकृति	२-१७२
दुःख	२-३३२
दृष्टान्त	२-११२
देव	२-१३४
देवद्वि	०-१०८
देवगतिके वेद	०-१६६
देवजीवममाम	२-१५६
ध्याता	२-३१४
धातुखिडके अघीश देव	२-२४३
नन्दीश्वरद्वीपाधीश देव	२-२५५
नन्दीश्वरसमुद्राधीश देव	२-२५६
नमस्कार	२-५३
नमस्कार	०-१७१
नय	२-२७
नय	२-२८
नरकद्वि	२-१०५
नारकनीमसमाम	- -

निग्रहस्थान	२-४०५
निगोद	२-७२
निगोद	२-१४८
निमोद	२-१६५
नित्यनिगोद	२-७३
नित्यनिगोद	२-७४
निदान	२-१२२
निर्जरा	२-५०
निर्दण	२-३६०
निर्माण	२-११४
निर्वर्तना	२-६२
निश्चयनय	२-६५
निश्चयनय	२-६६
नैगमनय	२-३३८
नैगमनय	२-४७४
प्रतिभास्य	२-४०६
प्रतिरूपपिशाचेन्द्रकी गणिमामहत्तरी	२-२२५
प्रतिरूपपिशाचेन्द्रकी बल्लभिम	२-२०६
प्रत्याग्यान	२-४५
प्रत्यक्ष	२-८२
	२-७१

प्रतिष्ठा	२-४०३
प्रमत्तविरतम आश्रयव्युत्थित	२-२६७
प्रमाण	२-७
प्रमाण	२ २६१
प्रमाण	२ ३२४
प्रमाणके फल	२-४४४
प्रमेयद्वित्वसे प्रमाणद्वित्वके ज्ञानम विमल्य	४ ४७७
प्रायोगिक ऋष	२ ३१८
पञ्चेन्द्रिय	२-५
प्रमाणरिपय	२-३४३
पदभग	२ २६६
पदार्थ	२ २
पर्याय	२-३१
पर्यायार्थिनय	२-६८
परमाणुओंके बंधके कारण	२-३३५
परमात्मभवनार्थापामना	२ ३३३
परमाधिप प्रत्यक्ष	२-८
परमात्मा	२ ३१
परिग्रह	२-११६
परिणाम	२-३२७
परिमाण	२-१४६

परिहारमिशुद्धिमपत	२ ४७१
परोक्षप्रमाण	७-११
परोक्षफल	७ ३०५
पांचवे नरकमे सम्यग्दृष्टि	२ ४६७
पातालपातालपार्श्वपर्वत पर्यंत	२ ७३८
पातालपातालपार्श्वपर्वतनिगामीदेव	७-७ ३६
पाप	७-४६
पापाश्रयद्वार	२ २६६
पुद्गल	२ ३३
पुण्य	२-४७
पुण्य	७ १७१
पुण्याश्रयद्वार	७ ७६५
पुष्कराक्षमानुपोत्तराधीश देव	७ २४५
पुष्कराक्षोत्तराधीश देव	२-२४६
पूर्णभद्र यक्षेन्द्रकी गणिनामहत्तरी	२-२२१
पूर्णभद्र यक्षेन्द्रकी वल्लभिरा	७ ७०५
पृथ्वीकायिक	२-१६१
पृथ्वीकायिक	२-१४४
फल	२ ३०३
फल	२-३०४
फलाभास	७ ४०४

घडरामुसपाश्वर्यती पर्वत	२ २३४
घडरामुसपाश्वर्यपर्वतामी दन	२-२३५
घन्य	२-४८
घन्य	२-१३८
घादरएरुन्द्रिय जीममाम	२ १५५
घारुणीद्वीपाधीश दन	२-२४७
घारुणीममुद्राधीश दन	२-२४८
घालप्रयोगामाम	२-१६५
वालप्रयोगामास	२ ४०८
वाद्यहेतु	२-३२४
वैश्वसिक्यन्ध	२-३१७
भङ्ग	२-२६८
भयद्विज	२-३५०
भाय	२ ३२८
भायनिक्षेपरूपकर्म	२-२६१
भायप्राण	२-१४२
भाषामरु शब्द	२-१७८
भीमेन्द्रगणिमामहत्तरी	२-२२२
भीमराक्षसेन्द्रकी वन्तमिका	२-२०६
भूतसे चैतन्यकी उत्पत्ति माननेपर वि०	२ ४४१
भूमि	२ ३४

भूयोदर्शनमेव यथादुपपद्यमानत्वाच्चरगमपरं	१८, २-४७६
भोगभूमि	२-१३३
भोगभूमिजवेद	२-१६७
भोगभूमिचतुर्यश्च	२-१३०
म्लेच्छ	२ ३११
मङ्गल	२ ३०१
मङ्गल	२-३८२
मणिमद्रयत्तेन्द्र की गणिरामहचरी	२ २००
मणिमद्रयत्तेन्द्र की वल्लभिरा	२ २०४
महाशालयत्तेन्द्र की गणिरामहचरी	२-२०७
महाशालयत्तेन्द्र की वल्लभिरा	२-२११
महाकाय उरगेन्द्र की गणिरामहचरी	२ २१६
महाकाय उरगेन्द्र की वल्लभिरा	२ २००
मतिमान	२-१५
मध्यमभोगभूमि	२-२३०
मन	२-५६
मनःपर्ययज्ञान	२-१३
मनुष्यद्विरु	२-१०७
महापुरुष किं पुरुषेन्द्र की गणिरामहचरी	२-२१५
महापुरुष किं पुरुषेन्द्र की वल्लभिरा	२ १६६
महाभौमरावसेन्द्र की गणिरामहचरी	२ २०३

" " ब्रह्मसिद्धि

मानमिह विनश्य

२ ७०७

मितरानकायत्याय

२-४०१

मिथ्यात्तरि

२ ४००

मिथ्यादर्शन

२ २३

मिथ्यादृष्टि

२-२१

"

२-७६

मिथ्यात्राद

२-८०

मुनि

२ २२

मोदनीपदम

२-१३४

मोदनीपदिकोऽयस्यानमृति

२ ५७

मोदनीपदिकस्य धम्यानमृति

२ ७७४

मोदनीपदिकोऽयस्यानमृति

२-७७३

"

"

मोदनीपदिकस्य स्थानमृति

२ ७७४

मोष

२ ७७६

मोषमार्ग

२ ७००

मुग्धराशि

२ २४१

मुपकेसरप्रातालपार्श्वपर्यंतवामी देव

२ ४०

योग

२ ३६३

२-४१

२ ६२

२ १००

योगजधमनुग्रहक सङ्क विरन्ध	२-३७१
रत्नत्रय	२ ३२६
राशि	२-३६१
लब्धिप्रत्ययतैजसशरीर	२-१०१
लक्षण	२-२६
लान्तरकापिष्टेन्द्रकविमान	२-२२८
व्यञ्जनपर्याय	२-१८७
व्यवहार	२-३३१
व्यवहारनय	२-२८७
॥	२-२८८
व्यवहारधर्म	२-३५
व्याप्ति	२ ११३
व्युत्सर्ग	२ १३७
॥	२-३६८
व्रत	२-६५
वचन	२ ५७
वचनप्रयोग	२-१६४
वचनमस्कारहेतु	२ १६३
वनस्पति	२ ७०
वरुणद्वीपाधीन	२ २५७
वरुणसमुद्रा गीश	२ २५८

चाग्नुति	२-३६६
पायुकायिक	७-१४७
"	२-१६४
निरूप	२-३६५
निरूपकेद्वारा अनिरूपके अभिमतहोनेपर वि०	२-३८२
" " " मतिञ्चयहेतुपर वि०	७ ३८३
विमलप्रत्यक्ष	२-१०
विक्रिया	२-१७०
विप्रतिपत्ति	२-४०६
निर्भगशानी	७-४५७
"	७-४५८
"	२-४५६
"	७-४६०
"	२ ४६१
"	२ ४६२
"	२-४६३
निरोध	२-३७६
निशेष	२-३४५
निषय	२-१२६
निहायोगति	२-१२३

वेदनीय	२-७६
वेदनाशशर्तमरण	२ ३००
वैमिथ्यकद्विक	२-६६
वैमिथ्यककाययोगी	२-४५७
वैमिथ्यकमिश्रकाययोगी	२ ४५३
वैमानिक	२-७८
शब्द	२-१७७
शरीर	२-१०५
शरीर रहित आत्माके अप्रतिभासके इष्टपर स०	२ ४२७
शरीरदेशमेष्टयदेशमेस्थितआत्माकेअप्रतिभासपरस०	२ ४२८
श्रुतज्ञान	२-१४
"	२-१६
"	२ ३०८
"	२-३१६
श्रुतकेवली	२-२६
श्रेष्ठि	२ ८३
शून्यवादके साण्डकचिरन्व	२-४१५
स्थापना	२-१२७
स्थापनाजिन	२ ३६३
स्थितिय	२ ४४६
स्वर	२-३४०

मक्रमण	२-३६६
सत्ता -	२-१३१
सत्पुरुष किंपुरुषेन्द्रही गणिसामहत्तरी	२-२१४
सत्पुरुष किंपुरुषेन्द्रही बन्लभिसा	२ १६८
मङ्गूतन्यरहार	२-२७६
सङ्गूतन्यरहार	२-२८०
मन्त्रिर्षयोग्यताके खंडक विरुन्ध	२-३६७
मन्त्रिर्षगति के खण्डक विरुन्ध	२-३६८
मन्त्रिर्षमहसारी द्वयक खण्डक विरुन्ध	२ ३६८
सन्त्रिर्षमहसारी कर्मक खण्डक विरुन्ध	२-३७०
सम्यक्चारित्र	२-४३
सम्यग्दर्शन	२-४१
सम्यग्दर्शन	२ ८८
सम्यग्दर्शन	२ ८६
सम्यग्मान	२ ४७
सम्यग्दृष्टि मुख्यशक्ति	२ २८५
समय	२ ३०७
समाधिमरण	२ २६२
सयोगिसमुदात्तगतप्राण	२-१६८
मरगतसोमान्यके खंडक वि०	२-४११
मरपद	२ २७०

मन्त्रलेखना	२-१३६
सविग्रह्य अविग्रह्यक एवम्पर विग्रह्य	२-३८१
मविग्रह्य अविग्रह्यके एवम्पर विग्रह्य	२-३८२
सविग्रह्य अविग्रह्यके एवम्पर सादृश्यहेतुपर "	२-३८३
सशान्यमरण	२-६१
महामार	२-३४०
सममणप्रकार	२-२६४
सख्या	२-३१०
सप्रहनय	२-२८६
संयोग	२-६३
मर	२-४४
सयतासयत तिर्यञ्चमम्यगृष्टि	२-४७०
संस्कार	२-३३४
संस्थान	२-३११
संस्थान	२-३२०
संमारी जीव	२-४
संज्ञिपञ्चेन्द्रियजीवसमाम	२-१५८
साक्षरनानवादियोंके जडप्रतिभामये विग्रह्य	२-४३६
साक्षरतासे ही नियतार्थबोधमाननेपर विग्रह्य	२-४३८
साक्षरतासे ही नियतार्थबोधमाननेपर विग्रह्य	२-४४०
सातवें नरकम सम्यगृष्टि	२-४६८

सामर्थ्य	२-१८२
सामान्य	२ ३४४
सामायिक	२-५२
मान्यरहारिकप्रत्यक्ष	२ ४४६
सामादन सम्यग्दृष्टि	२ ४७३
सीतोमयतदस्थयमङ्गलिरि	२-२३२
सीतोदोमयतदस्थयमङ्गलिरि	२ २३३
सुरूपन्द्रगणिरामहत्तरी	२-२२४
सुरूपन्द्रवन्तमिरा	२ २०८
सूक्ष्ममाम्पराय	२ ८७
सूक्ष्मैकेन्द्रियजीवसमाम	२-१५६
हास्यद्विक	२-३४८
हिंसा	२-३४७
हेतु	२-३४६
हेतु	२-३५१
शीरद्वीपाधीन	२-२४६
शीरसमुद्राधीन	२-२५०
छुल्लक	२-३८
चेतःशक्ति	२ १६२
चेतः परिवर्तन	२-६१
चन्द्रद्वीपाधीन	२-२५३

छौदसमुद्रावीश	२-२५४
ज्ञातव्यापारपर विम्व	२-३५८
ज्ञातव्यापारकी प्रमाणतापर विम्व	२-३७३
ज्ञातव्यापारकी अनन्यतापर विम्व	२-३७४
ज्ञातव्यापारकी जन्यतापर विम्व	२-३७६
ज्ञान	२-१६
ज्ञानके शब्दानुविद्धत्वप्रतिभास पर विम्व	२-३८४
ज्ञानके शब्दानुविद्धत्वप्रतिभासमेप्रत्यक्षहेतुपरविम्व	२ ३८५
ज्ञानकशब्दानुविरुद्धप्रतिभासस्वरूपके लटक विम्व	२ ३८६
ज्ञानको भूतपरिणाम मानने पर लटक विम्व	२ ४१६
ज्ञानको साक्षर माननेपर लटक विम्व	२-४१७
ज्ञानको अस्यसिद्धित माननेपर लटक विम्व	२-४१८
ज्ञानका स्वयमक्रियाविरोध माननेपर लटक विम्व	२ ४३१
ज्ञानकी क्रियाविरोधम लटक अपवाये	२-४३२
ज्ञानवेदज्ञानान्तरके लटक विम्व	२ ४३४
ज्ञानान्तरको प्रत्यक्ष माननेपर लटक विम्व	२-४३५
ज्ञानान्तरसे जडता प्रतिभासपर विम्व	२ ४३७

तृतीय अध्याय

अङ्गोपाङ्ग	३-३६
अवर्मद्रव्यक विणे। गुण	३-११७
अ गोत्रैवेयक	३ ६६

अन्तरात्मा	३ ३
अन्वयदृष्टान्तामास	३-७२
अननुगामी अवधिज्ञान	३-७०
अनत	३ १३
अनतानत	३ १८
अनुगामी अवधिज्ञान	३-६६
अनुपलब्धिहेतु	३ ७१
अनुमारीन्द्रि	३ ८१
अप्रमत्तविरत	३-२४६
अपर्याप्तैकेन्द्रियप्राण	३-५४
अपर्याप्त तिर्यञ्च	३-२३८
अपर्याप्त मनुष्य	३ २३८
अपर्याप्त देव	३ २४०
अर्धकी अभिधानानुपक्तताके स्वरूपके संडकविकल्प	३ १८२
अर्धपर्यायनैगम	३-२०६
अर्थव्यञ्जनपर्यायनैगम	३-२३०
अर्थनय	३ ६३
अर्थाभेदकारणके संडकविकल्प	३ १८४
अर्थाधिकार	३ २३९
अल्पप्रभुत्व	३ १७२
अवधिज्ञान	३-१६३

अभिरुल्पाध्यक्षावमीयैकत्वस्वरूपसुटकनिम्ब	३-१८३
अभिचार भक्त प्रत्याग्यान	३-१३२
अशुभरचनयोग	३ १३१
अशुभलेदया	३-५७
अमदुभूत पमहार	३-१२५
असत्यात	३-१२
असख्यातामरयात	३-१६
अमयत सम्यग्दृष्टिर्यञ्च	३-२४२
अमयत सम्यग्दृष्टि मनुष्य	३ २४३
अक्षर	३-६०
आमारयोनि	३-५६
आकाशद्रव्यके विशेषगुण	३-११८
आगमाभास	३ २१४
आत्मा	३-२
आनुपूर्वी	३ ७६
आहुनीय कुण्ड	३ ७७
आहारशरीरकीमूलकरणकृति	३-१६०
इन्द्रपरिपद	३-१४३-
उदयत्रिमङ्गी	३-७८
उपचरितामदुभूतव्यमहारनय	३ १०६
उपनय	३ १०३

उपभोग	३-१२१
उपयोग	३-१६६
उपरिमप्रिकल्प	३-१७३
उर्ध्वग्रैवेयक	३-६८
धृजुमतिमन पर्यय	३-१४०
एकारिमङ्ग	३-२७
एककद्रव्य	३-३८
आदार्शिकशरीरश्री मूलरक्षणकृति	३-१८८
क्रमभावनियमाविनाभा	३-१४६
कर्ता	३-१३६
कर्म	३-४४
कर्मरिप	३-१३०
रक्षण	३-१५३
रायगुप्ति	३-२०८
राल	३-१५६
रालद्रव्यके विशेषगुण	३-११६
इत्तान	३-१६२
केवलज्ञानी	३-२४७
केवलदर्शनी	३-२४८
ग्रैवेयक	३-६५
गणनकृति	

मर्मज्ञ	३ ४८
मारव	३-८१
गुप्ति	३-१५६
चरित्राराधना	३ ६
चित्राद्वैतसाधकाशस्यविर्वेचनस्वहेतुके विवृण्व	३-२१६
चेतना	३-१२०
छद्मस्य प्रमाणाः पस्पराफल	३ २४६
छद्मस्यपरमेष्टी	३-१६६
छल	३-२१३
त्रयस्य आयु समान	३-२५३
जन्म	३-४७
जप	३ २११
बलचरजीराश्रयेभूतसमुद्र	३ ६६
जगदणहेतु	३ १२५
जीवपरिणति	३-११६१
जीवममाम	३-११२
जीवममाम	३-११३
जैनलिङ्ग	३-३७
यद्वरमत्रार्ण	३-१७०
यद्वरमत्रार्ण	३ १७१
यत्तशरीर	३-१०६

तद्व्यतिरिक्ततिथ	३ १६४
तप आराधना	३-७
द्रव्यप्रमाण	३-२३४
द्रव्यपरिवर्तनके काल	३-१४६
द्रव्य शल्य	३ २००
द्रव्यार्थिस्नय	३-२३३
द्रव्यार्थिस्नयके निक्षेप	३-२२४
दर्शनमोहनीयकी प्रकृति	३-३४
दर्शनावरणकी देशान्ति प्रकृति	३-४५
दर्शनावरणके बन्धस्थान	३-११०
दर्शनावरणक सत्यस्थान	३ १०१
दुर्मगनिष्ठ	३ ४०
दुराशयसे उत्तर देनेके दृष्टानामाम	३-०१२
देवता	३ १३४
देशमयत	३ २४४
देशाधि	३-१६५
ध्याता	३ =
ध्यानमामग्री	३ ६
ध्यानाभ्यास	३-२३
धर्मद्रव्यके विशेषगुण	३-११६
धर्मा	३-१४७

नमस्कार	३-१३५
नमस्कारके तीन अङ्ग	३-६३
नय	३-२८
नक्षत्र	३-२४
नाडी	३-१४०
नारकमम्यग्दर्शनरासिद्वन्द्व	३-४०
निन्द्यग्रन्थ	३-२०४
निमग्न	३-१५५
नैगमनय	३-१२४
नैगमनय	३-१२२
नैगमनयरीप्रवृत्ति	३-२०३
नोआगमजिन	३-१६२
नोआगमद्रव्यकृति	३-१८६
नोआगमद्रव्यकर्म	३-१०३
नोअर्मर्मगणा	३-३५
प्रत्यक्ष	३-१८५
प्रत्यक्षज्ञान	३-३१
प्रथम पृथ्वीके मम्यग्दृष्टिनारकी	३-२४१
प्रमाणाभाम	३-२६
प्रमनविरक्त	३-२४५
प्रामाण्यकी स्वत उत्पत्ति माननेपर विरुद्ध	३-२२१

प्रोषधोपनाम	३ १०
पचेन्द्रियतिर्यञ्च	३-१६८
पद	३ ७४
पर्यायनैगम	३ २२८
परिग्रह	३ ६०
परिहार	३-२१०
परीतासरयात	३ १५
परीतानत	३-१८
पल्य	३ ६०
पात्र	३-२५
पात्र	३ २६
पारिणामिरुमान	३-१६०
पेञ्ज	३ २५०
बध	३ ७५
बधशरण	३ १५०
बध त्रिमङ्गी	३ ७६
बाधतपसो बध कहनेके कारण	३-२०६
भक्त प्रतिज्ञा	३ २१
भव्य	३ १००
भनपद्धति	३ ३६
भननत्रि	

भाषाशून्य	३-१८६
भूतसे चैतन्यकी अभिव्यक्तिपर विरुद्ध	३-०१७
भोग	३-१४४
भोगभूमि	३-२०
मकार	३-८२
मन्त्रीपृथ्वीम इन्द्रकपिल	३-६४
मतिमान	३-१३८
मध्यग्रवेपथ	३-६७
मध्यमश्रारक	३-४१
मनोगुप्ति	३-२०५
मनोगुप्तिके अतिचार	३-२०६
मिव्यादर्शन	३-१३३
मुनि	३-२३
मुमुक्षु	३-००
मृदता	३-५५
मूलवर्मके उदयस्थान	३-१०८
मूलवर्मके सत्त्वस्थान	३-१०६
मूलकरणवृत्तिके प्ररूपक अधिभार	३-१६१
मोहनीयकी तीन बंधस्थान वाली प्रकृति	३-११४
मोहनीय की तीन मध्यस्थान वाली प्रकृति	३-११५
मोक्षमार्ग सामग्री	३-१६७

युक्तानन्त	३-१०
युक्तामग्याव	३-१४
योग	३ १५४
योगस्थान	३-८४
रत्नप्रभाके भाग	३-८५
रत्नत्रय	३-१
लक्षणके दोष	३-६४
लोक	३ १५८
व्यन्तरोके निगमके प्रकार	३-८५
व्यवहार प्रमाण	३ १७६
व्यवहारमम्यक्तव	३ २५२
वक्तव्यता	३ २३१
बलश्रुद्धि	३-१०२
बलप्राण	३-१५७
गोशुप्तिके दोष	३-२०७
बात बलय	३ ४६
विश्लक्षित	३-१६७
निग्रहकगति	३ ४६
विद्या	३-१६६
विधाधरोमी निया	३ ८६
विमान	३-२-

त्रिल	३-२२६
त्रिषयामास	३-१४८
त्रिगुणाद्वैतपोषकमहोपलम्भापर विरुद्ध	३-२१५
त्रिदह क्षेत्रक प्रत्येक दशोम तीर्थ	३-१३६
वेद	३-१६१
वेदक सम्यक्त्व के दोष	३-३३
वैत्रियक मिश्रणाययोगी	३-२३५
वैक्रियकगरीरक्री मूलरसकृति	३ १८६
धारक	३-२७
भारक	३-१२७
श्रीगृहम होने वाले रत्न	३ १०१
शदनय	३ ७३
शान्य	३ ८६
शान्द	३-८८
शुभभार	३ ७०१
शुभलेश्या	३ ५८
षट्पर्याप्तिपूर्ण करनेवाले	३-२३६
षट् अपर्याप्तिवाले	३-२३७
सूत्रोत्पत्ति हेतु	३-१४५
स्थानगृहविनि	३ ४०

स्वर्गादिकके विमानोंके प्रसार	३ १४०
स्वर्गरीरसे आत्मासे भिन्न न माननेपर विरुद्ध	३ २१८
स्वतन्त्र से स्वमविदित न माननेपर विरुद्ध	३ २१८
मन्त्र प्रमाणोंके स्वतः प्रामाण्य माननेपर विरुद्ध	३ २२०
मन्त्र त्रिभङ्गी	३ २२०
मन्त्रमामग्री	३ १८८
मन्त्रिरूपं सहस्ररीके छटक विरुद्ध	३ १७७
मन्त्रिरूपं सहस्ररी अथापि द्रव्यके छटक विरुद्ध	३ १७८
मन्त्रिरूपं सहस्ररी गुणके छटक विरुद्ध	३ १७८
सन्यस्त क्षणके सुनने योग्य स्था	३-१७८
मन्त्र्यक्तपाराधना	३-१७
मन्त्र्यग्दर्शन	३ २०
मन्त्र्यग्निध्यादृष्टि	३ २११
ममय	३ १३७
ममाधिमरण	३-२२०
मराग मुनि	३ १०७
समिरुन्पाविरुन्पैरुत्वाध्यवसायके छटकविद्वन्	३ १८०
समिरुन्पाविरुन्पैरुत्वाध्यवसायके छटकविद्वन्	३ १८१
सन्नान्ति	३-१७४
सन्नान्ति	३ १७४
सन्पात	३ *

सन्निमार्गत्वा	३-५३
सागर	३-६१
सीतानदीके उत्तर तटपर विमगानदी	३ ६७
सीतानदीके दक्षिण तटपर विमगानदी	३ ६८
मीतोदानदीके उत्तर तटपर विमगानदी	३ १००
मीतोदानदीके दक्षिण तटपर विमगानदी	३ ६६
गुप्तादिकेभिन्न माननेपरमी मरुष मिद्ध करनेपरविरूप	३-२०५
सूत्रमन्त्रि	३ ४१
सूत्रोपमपत्	३ ८७
हेतु	३ ३०
सायोपशमिक दर्शन	३-१६४
सायोपशमिक सम्पत्त्व	३ १५१
रमन्त्रि	३-४३
ज्ञातप्रमेयद्वित्वसे प्रमाणाद्वित्वके ज्ञानमें विवक्ष्य	३ ०५४
ज्ञानके अतिचार	३-००३
ज्ञानाराधना	३-५
नायकशरीर	३-१०४
नायक भूत शरीर	३-१०५
नायकशरीरके आगमद्रव्यजिन	३ १६३

चतुर्थ अध्याय

अकृत्रिमशासाद्वार

अगुस्तलपुचतुष्प	४-३५
अधातिया कर्म	४-४२
अङ्गुल	४ ५८
अनीर	४-२/६
अन्त स्थ	४ १८१
अन्तरायाश्रवहेतु	४-१६७
अन्यदृष्टान्ताभास	४ ६४
अनन्तचतुष्टय	४ २०६
अनतानुबन्धीरपाय	४-५
अनाहारक	४ २५७
अनुपालना शुद्धि	४ ६६
अनुनीवीगुण	४ २१०
अनुगम	४ २२४
अनुमानसेअस्मर्मादिदितानमिद्विकेमाधनपररिक्ल्प	४-२३८
अनुयोग	४-१००
अप्रत्याख्यानागरण	४ ६
अप्रतिपत्ति	४ २३५
अप्रमत्तम उदयच्युच्छिन्नप्रकृति	४ १५५
अपर्याप्त द्वीन्द्रियके ग्राण	४ ५५
अपूर्वपरणके चरमभागम रन्ध्रपुच्छिन्न प्रकृति	४ १५३
अमार	४ ६६

अभिन्दगपूर्वसूत्र	४ ७५
अमूर्तअस्तिनाय	४ ४४
अस्तिवेन्नोपायसहेतु	४-२०६
अस्तार	४-२४२
असधिमन पर्ययविशेषक	४ २०२
असधिरिषय	४ २२७
अशान	४-६८
अशानके स्फुटदोष	४ ८१
अशुभनाययोगकी जाति	४-१८७
अशुभनामरुमके आश्रयहेतु	४ १६५
असत्परचन	४-७७
असख्यातवारविराज्य	४-१५६
अनयमके गुणस्थान	४ ३६
आनुषंग्य	४ ३
आयु	४ ७
आयुधगृहमाजीरत्न	४-१३०
आर्तध्यान	४ २३
आरा इन्द्रके दिशानिल	४ १०४
आराधना	४ ४०
आश्रम	४ ७६
आश्रव	४ ३०

आश्रममुत्थदोष	४ २०३
आहार सनाके वाद्यहेतु	४ ८०
आहारके महानोष	४-१८३
ईर्यापथ शुद्धि	४-७६
उपमर्ग	४ १८४
उपया	४ १८७
एर लया	४ ७६३
ऋषि	४-८३
एकेन्द्रियके जीवसमाप्त	४ ५६
एरोपलम्भरूपमहोपलभक १ दृक्त्रिकल्प	४ २३७
औद्गिर	४ ७०
औदारिक मित्राय योगी	४-७५३
ग्रोध	४ १०
ग्रोथ	४-१४
कथा	४ ५३
कर्म	४ १५०
कर्मसत्ता	४ १५१
कर्मभूमिजमनुष्यजीवसमाप्त	४ ८८
कल्पद्रोही गणितमहत्तरीही पुरीके नाम	४-११४
कल्पोपन्नोक्त प्रविचार	४ १६७
कपाय	४ ४

कषाय	५६
कषायप्रगर्भमरण	४-१६०
कषायप्रिवर	४-२२६
कषोत्तामन्याशलेभीर	४-२४२
कायान्मर्ग	४-८२
कार्मागुणाय योगो	४-२४५
काररगावन्यके मउरविस्व	४-२२१
कुशील	४-२४१
कनिसमुदात्त	४-८६
कृष्ण लेश्या चाने जीर	४-२५०
ग्रन्थकरि	४-२५५
गनदन्त	४-१२०
गति	४-१
पातियरम	५-४१
चतुरवरमप्ररर्ष	४-२१४
चतुरवरम प्ररण	४-२१५
चन्द्रसी मुण्य देवी	४-११०
चारित्र	४-२१३
चारित्रमोहनीयक आश्रयमुग्न्यहेतु	४-१६२
जम्पूद्वीपचतुर्दिग्द्वार	४-१३३
जिन	४-२२६

जीवविभागगुणपर्याय	४ १७६
जीवस्वभावगुणपर्याय	४ १७७
जीवममास	४ १६८
जीवममाग	४ १६८
ततर इन्द्रके दिशानिल	४ १०२
तत्तन्द्रक दिशानिल	४ १०३
तमरु इन्द्रक दिशानिल	४ १०४
द्रव्यप्रगर्भनय	४ ०६०
द्रव्यपर्यायनैगम	४ ०५६
द्रव्यपरितनरे प्रहार	४-२१८
द्वीषमध्यपरित्तैर्यापर्यत	४ १०६
दर्शनोपयोग	४-२११
दर्शनारणसी चारप्रकृतिक उदयस्थानवाली प्रकृति	४-१७३
दर्शन मार्गणा	४-५०
दर्शनारणसी तृतीयबन्धस्थानकी प्रकृति	४-१७०
दर्शनारणके चारप्रकृतिके मध्यस्थानकी प्रकृति	४-१७१
दान	४ २७
दान	४ २८
दानविशेषके हेतु	४ २०१
दिशा	४ ६३
दु पमाके अन्तम चतुर्विधमयप्रधान	४ १३१

देव	४ ४५
"	४ २४७
दशचतुष्क	४-३३
द्वैतगतिमें सम्यग्दर्शनके साक्षसाधन	४ ४८
दशसयतगुणस्थानमें बन्धव्युत्थिप्रकृति :	४ १५२
दोष	४-६५
ध्यान	४-२२
ध्यानमामग्री	४ १६४
धर्मध्यान	४ २५
धर्म लक्षण	४ २०७
नन्दनवनस्थ भवन	४-११६
नन्दीश्वरद्वीपमें धन	४ १३६
नन्दीश्वरद्वीपमें पूर्वदिशिग्रापी	४ १४०
" " " के अवीशदेव	४ १४१
नन्दीश्वरद्वीपमें दक्षिणदिशिग्रापी	४-१४०
" " " के अवीशदेव	४-१४३
नन्दीश्वरद्वीपमें पश्चिमदिशिग्रापी	४-१४४
" " " के अवीशदेव	४-१४५
नन्दीश्वरद्वीपमें उत्तरदिशिग्रापी	४ १४६
" " " के अवीशदेव	४ १४७
नमस्कारके अङ्ग चार	४ ६०

नरक चतुष्क	५-१५७
नारक	५ २४५
नामिगिरि	४ १२८
निक्षेप	४-२१२
नील लेख्यामाले जीव	४-२५१
प्रकृतिग्रन्थ	४ ६७
प्रत्याख्यानामरस्य	४-७
प्रमाणफल	४ २५८
प्रवा	५ ००८
प्रशस्तराग	४-२३०
प्रायोगिकशब्द	५-७३
पञ्चेन्द्रिय जीरममास	५-५७
पण्डित मरण	४ १८८
पद	४-२०४
पर्याप्त एकेन्द्रियके प्राण	४-५४
पर्याप्त नरक	५ २४६
॥ देव	५-१४८
परम्परविरोधि सद्भाव	४ २१७
पाण्डुरग्ननर्म शिला	४-१२१
पाण्डुरग्ननम मग्न	४ ११८
पापानुभाग	४ २०

वापोपदेश	४ ७७
पुण्यस्तुभाग	४ २१
पुद्गलक गुण	४ ४३
पुद्गलभेद	४-१६६
मध	४-३१
"	४ ३२
मयवेदनोपभोगपायाश्च हेतु	४-२०५
मय्य	४ २००
मयाभन्यमाधारण लब्धि	४-२१८
मयविपाकी	४ १४८
मायना	४ ८५
भोगभूमिर्न तिर्यञ्चपञ्चेन्द्रियके चीरममाम	४ ६६
" " "	४ ६७
भोगभूमिर्न मनुष्य चीरममाम	४ ६६
मङ्गलके प्रयोजन	४ ८६
मनुष्यापुर्नन्त्यके मुख्य हेतु	४ १६३
मनोयोग	४ २७
मनारिहति	४-१८५
मायरीन्द्रक निशानिल	४-१०७
मान	४-११
मान	४ ११

माया	४ १२
माया	४-१६
मत्तजीरोरी उर्ध्वगतिके कारण	४-१६३
मुद्रा	४ २३३
मूल दर्भक चन्धस्थान	४-१५८
मृनाश्रयस्थान	४ १६०
मेखन	४-११५
मेखनस्थभरनाप्रति	४ ११८
मोहनीयचतुष्क मधस्थानप्रकृति	४ १७०
मोहनीय चतुष्कोट्यस्थानप्रकृति	४-१७४
मोहनीय चतुष्क मन्त्रस्थानप्रकृति	४-१७५
यथाग्यातमिहार शुद्धि मयत	४ २५५
स्वकाभ्यंतरमुक्त्यचतुर्दिकट्ट	४ १३५
" तन्निगासिनीदरी	४-१३६
स्वकाभ्यंतराम्यतर चतुर्दिकट्ट	४-१३७
" तन्निगासिनीदरी	४ १३८
रौद्रध्यान	४ २४
लक्षणमृदुदिगन्तपाताल	४-१३४
लोमोत्तर प्रमाण	४-१६६
लोम	४ १३
लोम	४ १७

व्यतिरेक दृष्टान्ताभाम	४ ८५
ब्रह्मब्रह्मोत्तररूपेन्द्रियमान	४-१२७
वचन	४ ८०
वचनयोग	४ ७८
वचन मस्तरके अन्तरंग प्रयत्न	४ ७६१
वर्णचतुष्टय	४ ३४
वर्णार्तमरण	४ ८१
वर्णार्तमरण	४ १८६
वर्णार्तमरण नाम	४ १२६
वाक्य	४-१६२
वाचिः विनय	४-७३७
वादक अग	४ ७३४
विस्था	४ ५७
विहारीरस	४ ६२
विग्रहगति	४ ४७
विदिशा	४ ६४
विदेह	४-१६५
विनय	४ ६०
विषाही	४-१६
विभारगुणपर्याय	४-१७८
विनिक्तशय्यामनके प्रयोजन	४-२३१

निल	४ १०८
वेद मर्म्यक्त्र	४ २०८
वेद मर्म्यग्दष्टि	४-२५६
वेदमागणा	४ ४८
वैक्रियस्काययोगी	४-२४६
शास्त्रादरहेतु	४-२२०
शिक्षात्रत	४-३७
"	४-३८
"	४-३९
शुक्लध्यान	४ २६
शुभनामकर्मश्रित्युत्पहेतु	४-१६६
स्थावर चतुष्क	४ १५६
सद्वर्ग	४-१५४
स्पर्शान्तराय	४ ७१
स्वर्गन्दिशेन्द्रदिग्निमान	४-११२
स्वर्गोत्तरेन्द्रदिग्निमान	४ ११३
सम्यक्त्वगुण	४-५८
सम्यक्त्वगुण	४-१८१
सयोगिजिनके प्राण	४-६१
सर्वाभिघट दोष	४ ७४
सरिस्त्वप्रमाण	४ १७६

सज्जलनस्पाय	१८
गविनप्यर	१-१८०
सयोग	८ २४४
मना	४-५१
मानु	४ ८४
मामान्यरोगरत्यक्तिमरहतदुष्टश्च वमैरहनेपरविरूप	४ ३६
मामाविरुद्धोपस्थापनाशुद्धिमयत	४ ३६५
मामात्मनम ध्युत्तिष्ठत आश्रय	४ १६१
मीनानदीक उत्तरतीरपर वचार	४ १०३
मीनानदीक दक्षिण तीरपर वचार	४ १०४
मीनोदा नदीके उत्तर तीरपर वचार	४-१२६
मीनोदा नदीक दक्षिण तीरपर वचार	४ १०५
मीमत्तन्द्ररके दिग्विल	८ १०१
सूर्यभी मृगपदेवी	४ १११
सृष्टिरारण्यके विान्प	४ २२३
सौधमेन्द्रविमानपाग्रस्थनगर	४ १६८
सौधमंलोत्पालरन्पविमान	४ १००
मौमनमयनम भवन	४ ११७
हिमर इन्द्ररके दिग्विल	४ १०६
हिमा	४ ७८
हिमा	४ ७८
	४-२६२।

हेत्याभाम	७	४-२३
क्षपक शम्भा		४-१८६
क्षायोपशमिर ज्ञान		४-२८
क्षीणमोहमे त्रुच्छिन्न आश्रय		४-१६४
क्षेत्रविपारी प्रकृति		४ १४८
क्षस		४ ४६
क्षातव्यापारके धर्मस्वभाव माननेपर विरुद्ध		४ १२२
ज्ञानसे सर्वथा परोक्ष माननेपर प्रमाणतापर विरुद्ध		४ २४३
ज्ञानसे ज्ञानान्तरवेद्य माननेपर भी अनवस्थाके अभावपर विरुद्ध		४ २४०
ज्ञानमे ज्ञानक्रियासा विरोध माननेपर विरुद्ध		४ ०३८
ज्ञानानरणकी देशपाति प्रकृति		४-१८

पञ्चम अध्याय

अरुपाय		५-१८८
अचलद्रव्य		५ ८७
अचौर्यत्रतभायना		५-६१
अनीय द्रव्य		५-५२
अणुत्रत		५-१
अतिथिमविभागत्रत		५-४२
अन्तराय		५ ७
अन्तिमतीर्थर नाम		५-०६

अनवदण्डवत्के अति शर	५ ३८
अनिवृत्तिकरण गुणस्थानम रघव्युच्छिन्न प्रकृति	५-६०
अनृद्धिप्राप्त्यर्थे	५ ५७
अनुत्तरविमान	५-४४
अनुमानाङ्ग	५ ८०
अपर्याप्तिशीन्द्रियके प्राण	५-४३
अपरिश्रव्यत मानना	५-६३
अभक्ष्य	५-१०
अयोगिकेरलिङ्ग काल	५-११६
अरिष्टेन्द्रक विमान	५ ८८
अशुभभाज	५-१६५
अस्तिकाय	५ ७७
अस्तेयाणुप्रतातिवार	५-३३
असंक्लिष्टभावना	५ १२८
अहिमात्रत मानना	५ ५६
अहिमाणुप्रतातिवार	५ ३१
अक्षत्रिषय	५-२५
अक्षर लिपि	५ ८३
आचार	५ ४
आशर	५ ७०
आभिनिरोधिकज्ञान	५ ७७

आराधनाके अर्थ	५-१३२
आधर्य	५ ७१
आमघ्नमरण	५-१४६
इन्द्रिय	५-१३
इन्द्रिय विषय	५ १०६
इन्द्रियाक आसार	५ १२
उपक्रम	५-६४
उपमपत	५ ७२
अंगभिन्नाक्षर	५ ५४
अथा	५ १७६
अवर्ग	५-११८
अन्याणर	५ ५५
फलके फाय	५-१४०
गतिमार्गणा	५ ७६
गदित वचन	५-१३१
धमरन्तरी अग्रमहिर्पा	५ १४२
चरग	५-११६
चारित्र्य	५ २८
तूलिरा	५-६६
ज्योतिष्यन्तेव	५-४५
जनशाय	५ ११०

जाति	१-१४
जीरके असागरण भार	५ ५१
जीर ममाम	५-१००
टवर्ग	५-१२०
तवर्गाचर	५-१२१
तिथि	५-१६३
तिथिदेरता	५ १६४
तिथ्यंज्य	५-१८०
दर्शनारण्यचक्रोदयम्यानप्रकृति	५ १००
॥ ॥	५ १०३
॥ ॥	५-१०४
॥ ॥	५-१०५
॥ ॥	५ १०६
दर्शनमोहके आर्यके मर्यस्तु	५ ६७
दशदिशि ममुद्रात	५-१५७
दाताके आगूषण	५ ७६
दिग्गतके अतिचार	५ ३६
दुर्माना	५-१६८
दृष्टिदादाङ्ग	५ ८५
देवाधुनधके मुख्यहेतु	५ ६६
देशप्रतरे अतिचार	५ ३७

घारणा	५ ६८
नमस्कारके पञ्चव्यंग	५ ५३
नारभोक मुख्य लक्षण	५-१३७
नित्यमनसो प्रतिनियतात्ममन्त्री माननेपर	५ १७३
निद्रा	५ ८८
निदानचिन्ता	५-८४
नोर्मर्म	५-१३६
प्रत्यक्षनम्पतिनाय	५-११३
प्रमत्तगुणस्थानम उदयशुच्छिन्न प्रकृति	५ ६५
प्रमाण	५-१७७
प्रमाणाभाम	५ १४५
"	५-१८६
प्रायश्चित्त सूत्र	५ ७६
श्रीपशोपनाम व्रतके अतिचार	५-२०
पञ्च पतन्त्रा	५ ८६
पञ्चाक्षरमन्त्रार्थ	५ १५०
"	५-१५१
"	५-१५२
"	५ १५३
"	५ १५४
"	५-१५५

पञ्चाक्षरमन्त्रार्ण	५ १५६
पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च	५-१८२
पर्याप्त पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च	५-१८३
पर्याप्त तिर्यञ्च	५-१८४
पर्याप्त स्त्री	५-१८६
परमेष्ठी	५-१३
परिस्मर्ग	५-७३
परिश्रहपणिमाणाण्यतके अतिचार	५-३५
पद्म	५ १०२
पाप	५-६
पापस्थान	५-७४
पात्र	५ ६६
पूजाके अंग	५ ७५
पूजाके भेद	५ ८०
ब्रह्मचर्य व्रत भावना	५ ६२
ब्रह्मचर्याणुव्रतके अतिचार	५ ३४
ब्रह्मचारी	५ ६५
ब्राह्मणत्वादि ज्ञानिके सटक् विस्मय	५ १७१
च १	५-१५६
चधन	५-१६
चधहेतु	५ १५८

५११	[५५]	
५१०	वाद्यतपस्वी वाद्यताके कारण	५-१६७
५१०	अष्ट मुनि	५-१४८
५११	भागहार	५ ४८
५११	भारप्रमाण	५-१७८
५११	भिन्नावृत्ति	५ ७७
५१२	भोगोपभोगपरिमाणत्रयके अतिचार	५ ४१
५११	मतिज्ञानके पर्यायवाची	५-१७४
५११	मरण	५-४६
५२	महात्रत	५ ७
५१७	मायानशार्तपरण	५-१३४
५१८	मिथ्यात्व	५-३०
५१८	मिथ्यात्वमे उदयव्युच्छिन्नप्रकृति	५ ८४
५२२	मिथ्यात्वमे व्युच्छिन्नआश्रय	५-६८
५६२	मुनि	५ ५०
५४४	मूलकरण कृति	५-१६१
६४	मेरु	५-८८
७१	मोहनीयपञ्चमदयस्थानप्रकृति	५-१०१
५४६	मोहनीयपञ्चमदयस्थानप्रकृति	५ १०७
१६	" "	५-१०८
११	" "	५-१०८
११	" "	५-१०८

मोहनीय पञ्चरोदयस्थानप्रकृति	५ १११
योगस्थान	५ ६३
योनिमती पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च	५-१८१
रस	५-१८
सुख	५ ८
व्यग्रहार	५ १०६
वर्ग	५-११७
वर्ण	५ १६
मालमरण	५-१३३
मालमल्लचारी तीर्थसर	५-५६
विद्याशिक्षणके आभ्यन्तरकारण	५-१७६
विद्याशिक्षणके बाह्यकारण	५ १७५
विदेह	५ ६७
विनय	५-५८
विषेक	५ १२५
॥	५-१६२
वैरोचनेन्द्रकी अग्रमहिषी	५-१४३
शब्दप्रवृत्ति	५-१७०
शब्दोच्चारणके आभ्यन्तर प्रयत्न	५ ८६
शरार	५ १५
शुद्धनयदृश्यभाव	५-११४

शुद्धि	५ १२३
"	५-१२४
शुद्धमिध्यादष्टितर्यञ्च	५-१२७
शून	५-१६६
शेषभवनवासियोंकी अग्रमहिषी	५-१४४
शोकवेदनीयनोरुपायाभरहेतु	५-१४१
स्त्री	५-१८५
स्थावर जीव	५-१४६
स्थानरोंके आशर	५-१४७
स्मृतिप्रमोपस्वरूपके लडक निरूप	५ १६०
स्वाध्याय	५ ४६
सत्यव्रतकीमागना	५-६०
सन्यासव्रतके अतिचार	५ ३२
सम्यग्दर्शनकी लक्षि	५ २३
सम्यग्दर्शनके अतिचार	५-२१
समाधिभरणमे बाह्य शुद्धि	५-७८
समिति	५-३
सल्लेखनातिचार	५-२०
सक्रमण	५ ४७
सक्तिप्रभावना	५ १२७
सधात	५-१७

मयमर्क रमत्याम्	५-१६८
मभ्रप	५-१३५
ससार परिवर्तन	५-२४
सामायिकप्रवर्गे अतिचार	५-३६
सीतानदी के हृद	५ ६०
सीताद्विधावीग	५-१३८
सीतोदानदीके हृद	५ ६१
सीतोदाहृदावीग	५-१३६
सुगमदिक भेद व अप्रत्यक्ष होनेपर भी आत्मीय	
सिद्धिपर निवृत्त्य	५ १७२
ह्रस्वस्वर	५-११५
हिमप्रयोगप्रिया	५-१३०
ज्ञान	५ ५
गुणानरण्यमर्म	५-६

षष्ठ अध्याय

अग्निहाय	६ ७६
अद्वैतनक्षत्रादीके कल्पनाके स्वरूपके निवृत्त्य	६-११०
अनन्तानुबन्धीके नोक्कर्म	६ ५८
अनायतन	६-१८
"	६-११३
अनिवृत्तिकरणम २ व व्युत्थित प्रकृति	६ ६१

अनिवृत्तिरक्षणम व्युच्छिन्नयाश्रय	६-६३
अपर्याप्त चतुरिन्द्रियके प्राण	६-१६
अपूर्णरक्षणमें व्युच्छिन्नयाश्रय	६-६२
अवधिज्ञान	६-२०
अवरनक्षत्र	६-६६
अवरनक्षत्राधिदेयता	६-६७
अवसर्पिणीकालके भाग	६-२४
अविरुद्धोपलब्धिहेतु	६-३०
अशनके कारण	६-४१
अशनत्यागके कारण	६-४२
अक्षयानत	६-४३
आनतचतुष्केन्द्रविमान	६-५४
आम्यन्तरतप	६-२०
आलोचना	६-५०
आम्यय	६-१३
आहार	६-६५
इन्द्रियनिरोध	६-२५
इन्द्रियमार्गणा	६-५
इन्द्रियारिरति	६-३
उत्सर्पिणीकालके भाग	६-२३
अतु	६-२५

कपाय	६८
काय	६९
कायारिनि	६०
कायोत्सर्ग	६१५
कुलाचल	६-७६
गृहस्थोरुपदुर्म	६१११
" "	६-११२
गोन	६-७
जघन्यश्राव	६-४४
जीर समाम	६-६६
"	६६७
"	६-६८
जीरके विशेष गुण	६८१
जुगुप्सानोक्पायाश्रहेतु	६८३
तिर्यञ्चापुत्रधके मुग्न्यहेतु	६८५
द्रव्य	६१००
द्रव्यके सामान्यगुण	६३६
दर्शन	६२१
दर्शनानरणसी देशघातीप्रकृति	६-१०
दर्शनानरणके आश्रय	६३८
दर्शनानरण सी द्वितीयवधम्भानसी प्रकृति	६६६

दर्शनावरणपट्टमन्त्रस्थानकी प्रकृति	६ ७०
दृष्टान्ताभाम	६-१२७
नरकापुनन्धके मृग्यहेतु	६-६४
नो रूपायपट्ट	६ ५
प्रत्याख्यान	६ ५१
प्रतिक्रमण	६-४६
प्रमत्तविग्नतम षडभ्युन्मिष प्रकृति	६-५६
प्रमाण	६-१०१
प्रमादके गुणस्थान	६ ६
पञ्चलेख्यार्थ चिह्न	६ ८६
पर्याप्त द्वीन्द्रियके प्राण	६-१४
पर्याप्ति	६-१४
पर्यायार्थिकनय	६ ८३
पानाहार	६ ८५
पुद्गलके विभेद गुण	६ ८२
पूजा	६ ४५
भेद	६ ८६
मङ्गल	६ ५०
मिथ्यात्वप्रकृति के नोर्म	६ ५७
मोहनीयपट्टद्वयस्थान प्रकृति	६ ७१

मोहनीयपट्टोदयस्थान प्रकृति

” ”

” ”

” ”

” ”

” ”

रतिनोरुपायाश्च

रम ऋद्धि

” ”

रम त्याग

रूपी अज्ञीय

लेख्या

लौरिस्मान

व्यञ्जनपर्याय नैगम

व्युत्सर्ग

वरनक्षत्र

वरनक्षत्राधिदेयता

वस्तुमानरीति

वदना

वायुशाय

वायव्य

६ ७३

६-७४

६ ७५

६-७६

६ ७७

६ ७८

६ ८०

६-४०

६-४५

६-११४

६-१०७

६ ८

६ ३१

६ १००

६-५३

६ ८८

६ ८८

६-२८

६ ४७

६-८०

६-१८

၆၆၀

၆၁၆

၆-၇၇၀

၆-၀၀

၆-၃၃

၆ ၃၈

၆-၇၀၇

၆ ၇၀၃

၆-၇၀၃

၆ ၇၀၈

၆-၇၀၈

၆-၇၀၆

၆ ၈၀

၆ ၃၈

၆ ၃၆

၆ ၀၈

၆-၈၆

၆-၇၇

၆ ၇၀၀

၆-၇၀၆

၆ ၇၇

भजन

१ १५

मर्मगतमामान्यक यन्त्रानाम् अनुपलभकं विद्वत् ॥

मायायिक

६५

सारयक

६६

६७

हाथनोरशापाथर

६७

विद्वत्

६८

प्रानासखर आथर

६८

प्रानसी मफलना

६९

६९५

अजनेन्द्रकवि

गसम अघ्याय

अभियरचन

७३८

अनुपलब्धिहत

७३८

अपर्याप्तपञ्चन्द्रियक प्राण

७३९

असुरकुमारकी सेना

७४

असुरको छोड़कर राय मरने ॥

७३८

आत्म हित कारिणी

७४८

आथर

७४

७४

७५

मोहनीयमस्तरोदयस्थान प्रकृति

७६०

"

७६१

"

७६२

"

७६३

"

७६४

१ मोनरे अस्तर

७-७०

राक्षसव्यतर

७३३

लेख्यामार्गणा

७१०

व्यन्तरेन्द्रकी सेना

७-४०

व्यन्तरेन्द्रसेनाप्रधान

७-४१

व्यमन

७४

विजयार्जुमागीरत्न

७५६

विषयनिरामक ४ डक विकल्प

७-५४

शब्दस्वर

७५७

शील

७-१

शुक्ललेखाक चिन्ह

७७०

शुभोपयोग

७६६

स्पर्शक अन्तराय

७७७

सप्तमङ्ग

७१४

महाचरमत्र वर्षा

७७४

"

७७४

निरचयव्यसन	७ ६६
प्रतिक्रमण	७ २६
प्रपाण	७ ६३
प्रलयम पृष्टिया	७-५०
पद्मलेश्याराले जीर	७ ६०
पर्यप्तिग्रीन्ट्रियक प्राण	७ ६
परमस्थान	७ ५
पलाभाम	७-३६
पीतलेश्याराले जीर	७-६१
भय	७ १३
भीति	७-६०
भृत व्यतर	७-२८
भोजनरु अतराय	७ २६
भोगभूमि-१ मत्ताहिर राय	७-४८
महन्द्र रत्नपन्द्र विमान	७-४०
मिव्यात्य	७ ८७
मोदनायमत्तस्थान प्रकृति	७-५५
"	७-५६
"	७-५७
"	७-५८
"	७ ५८
"	७ ५८

मोहनीयममोदयस्थान प्रकृति	७ ६०
"	७ ६१
"	७ ६२
"	७ ६३
"	७ ६४
मानके अरसर	७-७०
राक्षसच्युतर	७ ३३
लेश्यामार्गणा	७ १०
व्यन्तरन्ध्री सेना	७-४०
व्यन्तरन्ध्रसेनाप्रधान	७-४१
व्यमन	७ ४
विजयार्थभार्यारत्न	७ ४६
विपर्ययनिरामके ४ डर विवृण्व	७ २४
शब्दसर	७ ५०
शील	७-१
शुक्ललेण्याक चिन्ह	७-७०
शुभोपयोग	७ ६८
स्पर्शके अन्तराय	७ २७
सप्तमङ्ग	७ १४
मत्ताक्षरमंत्र वर्ण	७-७४
"	७ ७५

महावरमंत्र इति	७-७६
"	७ ७७
"	७ ७८
"	७-७९
"	७-८०
"	७ = १
"	७-८२
महावर विद्याः	७-८३
सम्यग्दर्शनं प्रतिपन्न	७ ३
ममृदात	७-१४
मयोगक्षेत्रनियाम व्युत्थित आश्रय	७-१३
मयम मार्मणा	७ ६
ममक्त लक्षण	७ ७१
माधुव्यञ्जन	७-१६
गामार्मिक शुद्धि	७-३५
मौमनम दृष्ट	७ ४२
दृष्टिप्रत्यय वनस्पति	७ ६५
क्षपःशिलामन्तर योग्यता	७ ६७
क्षेत्र	७ १८

अष्टम अध्याय

अश्विनप्रपुद्गेतु

८-३०

अधर्मद्रव्यके सामान्यगुण	८२५
अन्तर्मागणा	८२३
अनुभवचन	८२४
अनुयोगद्वार	८२५
अप्रतिष्ठित शरीर	८२८
अपहनसयम शुद्धि	८३८
अनैरान्तिर हेत्याभास	८३९
अष्टप्रवचनमाठरा	८२३
अष्टक्षरमंत्रयज्ञ	८२७
"	८२८
"	८२९
"	८३०
"	८३१
"	८३२
"	८३३
"	८३४
अग्नशुद्धि	८३०
अमत्सत्तासामिद्रहेत्याभास	८३८
आराशट्रयक सामान्यगुण	८६६
आगतुम मुनि परीक्षा	८०८
आचार्यरैगुण	८१८

आर्यविवाधर	= २५
उच्चगोत्रके मृग्य आश्रय	= ७६
उपव्यूहचिपश्चाद् धन्यन्ति न प्रकृति	= ७३
उपमाप्रमाण	= ५८
उपशममन्यारवि	= १२६
अद्धि	= ३५
अद्विधातार्य	= ३६
यौपनिशद्बुधि	= ३१
"	= ७०
रर्म	= २
वर्मरन्ध	= ३
रर्म प्रकृतियोके दृष्टान्त	= ७१
कर्मस्थिति रचनामे नेय राशि	= ७८
रायरे अङ्ग	= २०
रामाणिपुद्गलद्रव्य	= ७४
रालद्रव्यर सामान्यगुण	= ६७
गधरेविद्या	= ४२
चारणश्रद्बुधि	= ११५
चिन्त्रिन्सा	= १०१
ज्योतिष्कदेव पद	= ४५
जीयममाम	= ७६

जीव ममास	८-८०
जीव सामान्यगुण	८-८२
द्रव्यपर्यायिनैगम	८-१२०
दिग्गज	८-५२
देशमयत्तमे उदयव्युच्छिन्न प्रकृति	८-७०
दैत्यमित्रा	८-४३
ध्यानक थङ्ग	८-१०६
धर्मद्रव्यके सामान्यगुण	८-८४
नन्दनरनक कूट	८-५०
नदनयनकूट शिग्ररस्यदिवक्त्र्या	८-५१
नामरुमरु बन्धम्यान	८-७५
नीच गोत्रके मुख्याथर	८-७७
प्रातिहार्य	८-१६
पृथ्वी	८-११
प्ररचनमातरा	८-१०
पर्याप्तचतुरिद्रियके प्राण	८-७
परात्मवाप्ती	८-६८
पुद्गलक उपग्रह	८-४८
पुद्गलके सामान्यगुण	८-६३
पूनाक द्रव्य	८-२१
भार प्राण	८-३७

मङ्गलद्रव्य	॥ ६६
मतिज्ञानरू त्रिपय	॥ १२४
मद	॥ १४
महानिर्मित्त	॥ २७
महारोग	॥ ११७
महाहिमयान्पर रूट	॥ ६६
मातङ्गविद्याधर	॥ २६
मानवशक्तिमरण	॥ १०५
मुनिक द्वारा रही गद् कथा	॥ १०४
मेरुमध्यगत प्रदण	॥ ११६
मोहनीयरी अष्टमोदयस्थान प्रकृति	॥ ८१
"	॥ ८३
"	॥ ८३
"	॥ ८४
"	॥ ८५
"	॥ ८६
"	॥ ८७
"	॥ ८८
"	॥ ८९
"	॥ ९०
"	॥ ९१

रुक्मिकुलाचलपरकूट	८६०
रुचकगिरिपूर्वदिक्स्थकूट	८६१
रुचकगिरिपूर्वदिक्स्थकूटकी निवासिनीदेवी	८६२
रुचकगिरिदक्षिणदिक्स्थकूट	८६३
” निवासिनीदेवी	८६४
रुचकगिरिपश्चिमदिक्स्थकूट	८६५
” निवासिनीदेवी	८६६
रुचकगिरिकेउत्तरदिक्स्थकूट	८६७
” निवासिनीदेवी	८६८
लौकान्तिक द्व	८६९
लौकिक शुद्धि	८७०
व्यन्तर	८७१
व्यन्तरदक्षिणेन्द्र	८७२
व्यन्तरउत्तरेन्द्र	८७३
व्यन्तरदक्षिणपद	८७४
व्यन्तरवैत्यपद	८७५
व्यन्तरेन्द्रनगराश्रयद्वीप	८७६
वचनमस्कारस्थान	८७७
विरुद्धहेत्वामास	८७८
श्रावकके द्वारा कही गई कथा ,	८७९
श्रावक क मुख्यगुण	८८०

श्रीमद्भक्त मुद्राङ्गुलि

१७४

१७४

शब्दोच्चारणस्थान

१७४

१७४

स्पर्श

१७४

स्पर्श र अन्तराय

१७४

१७४

स्पर्श विद्येन्द्र की अग्रदेरी

१७४

१७४

स्पर्शोत्तरन्द्र की अग्रदेरी

१७४

१७४

सम्पत्तपोपङ्गुलि

१७४

सम्पत्तदर्शनके अग्र

१७४

१७४

सम्पत्तदर्शनके दोष

१७४

सम्पत्तदर्शनके साक्षगुण

१७४

सम्पत्तदर्शनके अग्र

१७४

सिद्धके मुद्राङ्गुलि

१७४

सीता नील मध्यस्थ विदेहदेश

१७४

की रावधानी

१७४

सीतानिषमध्यस्थविदेहदेश

१७४

की रावधानी

१७४

सीता नीलमध्यस्थविदेहदेश

१७४

की रावधानी

१७४

ज्ञान

१७४

ज्ञानमार्गेणा

१७४

१७४

नरुम अघ्याय

अग्निहोमारी सेना	६६
अनंत	३२
अनादिबैलमिकरंघ	३४
अनुदिशविमान	७०
अनुभयचन	७३
अनुरतमस्यरुग्मे स्युच्छिनआश्रय	४७
अशुभोपयोग	६२
अमरुगान	३१
आमद्रव्यकृतिके अधिहार	८०
उदविहोमारी सेना	७२
उपशान्तमोहमे आनव	६४
ऐरातस्थविजयापर कृद	३७
वापिकविनय	५५
गैवेयकेन्द्रयविमान	७१
चक्रवर्तीनी निधि	२४
जीममाम	४८
	४५
द्वोपहोमारी सेना	७३
दर्शनारण्यकी प्रकृति	३३
दर्शनारण्यकी प्रथमवधस्थानमे प्रकृति	४९

दर्शनावरणकी नरकमत्तस्थानप्रकृति	६-५
टिक्कुमारकी सेना	६-७४
देवता	६-१३
नय	६-६०
नवयोटी	६-१६
नवनिधिके कार्य	६-४१
मवाछर मंछ वर्य	६-७५
"	६-७६
"	६-७७
"	६-७८
नागकुमारकी सेना	६-६६
नामधर्मनप्रकृतिकमत्तस्थानप्रकृति	६-५६
नारद	६-२३
नारायण	६-२१
निष्कधपर दूट	६-३५
नीलपर्वतपर दूट	६-३६
नैगमनय	६ ८८
नोरुपाय	६-७
नोरुपायवशात्तमरण	६ ८
प्रतिनारायण	६-२२
प्रनिद्धग्रह	६ २८

प्रायश्चित		६-१५
पदार्थ		६ १
पर्येतिअसंज्ञीपञ्चेन्द्रियके प्राण		६-११
पद्माभासजअनुमानाभास		६-८६
पात्रदानकेअरसरपर भक्ति		६ २६
पूजाके समद्रव्य		६-१६
भविष्यउत्सर्पिणीकालके नारक		६ ८३
भरतस्यविजयार्धपरकूट		६ ३८
भावीउत्सर्पिणीमें धन्देव		६ ४२
“ ” नारायण	“	६ ४३
“ ” प्रतिनारायण		६-४४
मान्यमानगजदतपर कूट		६-३६
मिथ्यादृष्टि		६ ८७
मेघापृथ्वीमें इन्द्ररविल		६-३३
मोहनीयक उदयस्थान		६४६
मोहनीयनगबन्धस्थानप्रकृति		६-५०
“		६-५१
“		६ ५२
“		६ ५३
“		६-५४
“		६-५५

मोहनीयनयनस्थानप्रकृति	१८५५६
"	६-५७
'	६-५८
योनि	६-५९
व्यन्तरोके चैत्यवृक्ष	६-६०
बलभद्र	६-६१
रस्तुधर्म	६-६२
वातरुपाक्षी सेना	६-६३
वातरुपायक गुणस्थान	६-६४
विस्मयक जीवसमाम	६-६५
विष्णुमारकी सेना	६-६६
विष्णुप्रमगनरुतपर रुद्र	६-६७
शम्भुश्रीरुणशस्त्रनिष्पलीरुणभद्र	६-६८
शीलमीनाइ	६-६९
स्तनितुमारकी सेना	६-७०
स्वच्छन्दक लक्षण	६-७१
सजात्यमद्भूतव्यवहार	६-७२
मजातिविजात्यसद्भूतव्यवहार	६-७३
मासात्मन उदयच्युच्छिन्नप्रकृति	६-७४
सुपर्णमारकी सेना	६-७५
सेनाक भेद	६-७६

२० चपराङ्गद्वयस्तरयोऽयता	१६-६१
२१ क्षीयिष्वाव	१६-६२
२२ क्षीणमौहमे आश्रय	१६-६५
२३ भ्रमनरु	१६-६६
२४ नायकशरीरनोच्चागमव्यकृति	१६-६७

दशम अध्याय

२५ भ्रमज	१०-२४
२६ अथेग्राहकप्रत्ययदूषणार्थपरिक्लृप्	१०-७६
२७ अविरतमन्यक्त्वमरध्वञ्छिनप्रकृति	१०-४३
२८ अशानदोष	१०-२५
२९ अमत्यग्रचन	१०-७२
३० असुरयातगुणनिनरामय	१०-१२
३१ अतर्काद्ब्रह्मानमहितगार्तनरख	१०-६१
३२ आलोचनाके दोष	१०-७०
३३ उपवास	१०-७१
३४ उपामशध्ययनक अभिज्ञानस्तु	१०-१६
३५ ओभिरममाचार	१०-२८
३६ त्रिपान्द्वि	१०-४२
३७ करण (कर्मावस्था)	१०-१७
३८ कृत्यवृत्त	१०-१८
३९ रामद वग	१०-५१०

मिनर	१० ३८
मिपुरुष	१० ३६
मुशीलमुनि	१० ६०
कृष्णलेख्याके लक्षण	१०-५६
केवलज्ञानके अतिशय	१०-११
गर्धर्वव्यतर	१०-४१
चक्रवर्तीके भोग	१०-१८
जन्मके अतिशय	१०-१०
जीयसमाम	१० ४७
"	१०-४८
द्रव्यके विशेषस्वभाव	१०-३५
द्रव्यप्राण	१० ५
द्रव्यके सामान्यगुण	१०-५१
द्रव्यार्थिनय	१०-५२
द्विनक अभिकार	१०-७४
दर्शनार्थ	१०-३
दर्शनके अन्तराय	१०-५३
दशमुण्ड	१०-३०
दशाक्षर मन्त्रार्थ	१० ७०
देवपद	१० १५
धर्म	१०-१

धर्मध्यान	१०-८
नपु सखेदनोत्पायाश्रव	१०-६८
नाम	१०-७८
नामकर्मदशमचस्थानप्रकृति	१०-५०
नारकयोनि	१०-७७
प्रत्यारब्धान	१०-७३
पर्याप्तसन्धीके प्राण	१०-६३
पुद्गलके पर्याय	१०-६५
पु वेदनोत्पायाश्रव	१०-६७
चाक्षतपके फल	१०-७५
भवनवामी	१०-१४
भवनवामीके चैतन्यबुद्ध	१०-३७
भवनरासीदक्षिणेन्द्र	१०-२६
भवनवामीउत्तरेन्द्र	१०-२७
भवनरासीके मुकुटचिन्ह	१०-३६
भेदभगप्रक्रियोपयोगी	१०-३४
मन पर्यायनानी	१०-७६
महानिन्द्यभाषण	१०-५६
महोरगव्यन्तर	१०-४०
मैथुनदोष	१०-२६
मोहनीयके बधस्थान	१०-४६

मौहनीयदशसौदयस्थानप्रकृति	१० ४६
बद्धमानतीर्थवरक समय अन्त कृतकेवली	१० ६३
“ “ औपपादिक	१०-६४
वाद्यपरिग्रह	१०-१३
वेपावृत्त्य	१५ ७
ममलक्षण	१० ३०
शुक्ललेखाके चिह्न	१०-५८
स्थानरदशरु	१० ४४
स्त्रीवेदनोरुपावाश्रय	१० ६६
सहपायक गुणस्थान	१०-४
सत्पवचन	१०-२१
मनुभारस्याप्यधर्म	१०-७३
सन्यासासतरम आचार्यका स्वसधर्मे निरामके दोष	१०-५४
मम्यरत्न	१०-७
मम्यवत्त्वविनयस्थान	१०-६२
सम्यग्दृष्टि	१०-८०
ममानसज्ञकर्ण	१०-३१
मर्वादिज्ञा	१० १६
मंततिश्रीमीमांसादिविषयीआदित्र	१०-७२
संयोगीशरीर	१० ३३
मूढमगाम्परायर्मे आश्रय	१०-५६

क्षपकभूमिशय्यायोग्यता	१०-५५
त्रसदश	२०-४५
अग्निराधानारकश्चद्विधमत्र	२१-३७
अग्निभयवारक	२१-४५
अथ ररणरचनानेयराशि	२१-१६
अतन्त	२१-२६
अहमिन्द्र	२१-५०
एकादशाक्षरवर्ण वाले मत्र	२१-२४
" "	२१-२५
करण (ज्योतिषविषयक)	२१-२३
कल्पातीतेन्द्रकनिमान	२१-१७
गनमडनिराणश्चद्विधमत्र	२१-३१
घोरभयनिवारणश्चद्विधमत्र	२१-३२
निनेन्द्रमें ११परिषह	११-३
जीनममास	२१-१८
तिर्यगेष्टादश	२१-६
द्रव्यके सामान्यस्वभाव	२१-३१
दुःखितनेत्रदुःखवारकश्चद्विधमत्र	२१-४१
धनलामनिमित्त	२१-४३
नीललेश्याके चिह्न	२१-२०
तवाधानारकश्चद्विधमत्र	२१-३५

पट्ट ५८५८ स्थान	११७
परमन्त्रनिरारण्यदिनिमित्तश्चदिमंश	११३४
परोदयप्रप्यमानप्रकृति	११-१५
पापगुण	११-२०
पार्श्वस्थानिनिः	११२१
पदिद्वयप्रकृतिगानवगसस्य	११-४८
मनायादिज्ञानिनिमित्तश्चदिमंश	११-४९
मोहनापञ्चममन्त्रस्थान प्रकृति	११-१९
युद्धमयनारण्य मंश	११४७
रुद्र	११४
व्यसमायनामादिनिमित्तश्चदिमंश	११-४०
६३१ पृथ्वीम इन्द्रविल	११-१०
विक्रिया अदि	११-८
विपुल योनर अदिमंश	११२८
आरक्षी प्रतिमा	११२
ग्वानविपनिवारकश्चदिमंश	११-३०
,शत्रु य गिरपीडा निवारक अदिमंश	११-२७
,शत्रु आराधनास हानिना धारक	११-३६
शत्रुस्तम्भनिमित्त	११४०
शिगर, पर्यंतपर कूट	१११४
शिर पीडा वारक अदिमंश	११३६

ममविजयमौमागपनिमित्तक अद्वि० प्र	११-३३
ममवमरणभूमि	११-१
सर्पभयवारकमत्र	११-४४
सर्पपिपदरीयरणअद्विमत्र	११-४६
सर्पशेषनिशाररुव सर्पसीलरुअद्विमत्र	११-२६
सर्पशरीरोगवारक अद्वि० प्र	११-३८
विद्वविशेषरुज्ञानप्रकार	११-११
हिमगान पर्यंत पर बूट	११-१३
हत्वाभाम	११-१०
घेप्रमापप्रकार	११-६
अत्रिपासादी	१०-१५
अग	१०-६
अयोगिगुणस्थानमवध युच्छिन्नप्रकृति	१०-१६
अयोगरंजलीमें उदययोग्यप्रकृति	१०-३१
अरिरति	१२-७
आह्वानेच्छापूर्क	१२-३७
उपयोग	१२-१०
कर्मभूमिनपन्नेन्द्रियके जीवसमाप्त	१२-१६
कल्पेन्द्र	१२-५
चक्रवर्ती	१२-०
चारित्रमोहनीयमौ सर्वघाति	१२-६

जल वममाम	१२ २२
जीवसमाम	१२ २३
"	१२ २४
तन्त्रनिमित्तक अद्विमत	१२ ३८
तपके अतिचार	१२ ४६
द्वादशाक्षर मंत्रवर्ण	१२ ३३
"	१२ ३३
"	१२ ३४
द्वेष प्रकृति	१२ ४३
प्रसिद्धमहापुरुष	१२ ८
पिशाचादि भयनारक	१२ ४०
भयनारक राजधननिमित्तक अद्विमत	१२ ४१
मानना	१२ ४
भारी उत्सर्पिणीमें चक्रवर्ती	१२-१८
भोगभूमिज पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च जीवसमाम	१२-२६
मत्स्यपाशद्वीकरण अद्विमत	१२-३६
मतिज्ञानके विषय	१२-११
मोहनोयनमोदय सत्त्वस्थान प्रकृति	१२ २५
यक्ष	१२-१७
राशि	१२ २१
व्यतर विशेष	१२-१०

१. वृत्ताके गुण	१२-२८
२. वसन	१२-१३
३. भावक क प्रत	१२-१
४. शत्रुव्याधिभयनिवारकाणि निमित्त श्रद्धिमत्र	१०-३८
५. स्थाप्यश्मे	१२-३५
६. स्वभावपर्याय	१२-२७
७. मन्त्राधिकारी श्रावक	१२-४४
८. मयन्तार्थ ४८ मुनियोरु काय	१२-३०
९. ममाममि	१०-१४
१०. मन्त्रकन्धके अमात्रका जडा नियम है	१२ ४५
११. ममुद्रमयवारक श्रद्धिमत्र	१० ४२
१२. सावधनचन	१२-२६
१३. अनन्तानुबन्धी कषाय	१३-३१
१४. अप्रत्याख्यानाग्रणीय	१३ ३२-
१५. अपोगिमिचरपसमयमें सत्यव्युद्धिप्र प्रकृति	१३-४
१६. अपोगिकेवजीमें भाव	१३ १५
१७. उद्वेलन प्रकृति	१३ ५
१८. एकान्तमत	१३ ७,
१९. गर्भस्तमनगर्भापतननिमित्तमन्त्र	१३ २४,
२०. चारित्रिक अङ्ग	१३-१३
२१. जीव समाम	१३ ८

तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यकृति
तेरह यत्तर धाले मन्त्र

१३ २७

१३-१६

॥

१३ १७

॥

१३-१८

॥

१३-१९

॥

१३ २०

दुर्जनशरीररुण जिह्वास्तमननिमित्त मन्त्र

१३ २७

दर्मिन्नादिभयवारकमन्त्र

१३ २५

धम्मापृथीमें इन्द्रकणिल

१३ ३

नामस्मृके सत्त्वस्थान

१३ ६

निर्यापकके गुण

१३-१४

प्रत्याख्यानासरणीय

१३-३३

प्रतिपादीशत्रुभयवारकमन्त्र

१३-२२

मनुष्यजीवममास

१३-१२

मोहनीय की देशघन्ती प्रकृति

१३-२

मोहनीयचतुर्थध्वस्थानप्रकृति

१३-६

॥

१३ १०

मोहनीयअष्टमसच्चस्थानप्रकृति

१३ ११

रागप्रकृति

१३ २६

विद्यामन्त्र

१३ २१

विषमज्वरवारकमन्त्र

१३-२३

श्रावक

सञ्चलन

२५ ६

सम्पत्ति लाभ निमित्तक मन्त्र

५ १०

साधुचरित्र

५-२४

अङ्गनाथश्रुत

१५ ८

अध्यात्मैकान्त

१५ १

अनसन्निधौ चिह्न

४-१७

आप्रायणीपूर्वके अधिकारवस्तु

२५-५

आम्यतर परिग्रह

२५ ६

कुलरर

१५ ७

कुलररकार्य

५ २

गृहस्थक लक्षण

२०

गुणस्थान

२५

चक्रवर्तीके रत्न

१-१३

चतुर्देशावरमन्त्र

१५ २२

॥

१५-१६

॥
जीवममाम

१५ २१

॥

१५-३

॥

१५-३३

॥
वैवर्तक॥
नामिक

परमत्रमरणादिनिमित्तमत्र	१४ ३२
पिशाच	१४ २०
पूर्व	१४-४
मयरोगोपसर्गनारफप्रतापसारक अद्धिमंत्र	१४ ३३
भोगभूमिजमद्विहाके आमरण	१४-२६
भोजन मल	१४-१६
महानदी	१४-१४
मार्गणा	१४-६
मोहनीपदेशपातीप्रकृति	१४ ७
मोहनीपसरपातीप्रकृति	१४ ८
विद्या	१४-१७
थोता	१४-१२
स्वर्गनासियोंके मुकुट चिह्न	१४-१६
सभोगकेरलीमें भाव	१४ २८
सरोपद्रवनाशक मन्त्र	१४-३१
ज्ञानमात्रात्मनिस्थाद्विसद्व्युत्पन्नधर्म	१४ २३
उदररोगनारक अद्धिमन्त्र	१५-१८
कपोत लेरपाके चिह्न	१५ १६
कर्म भूमि	१५-११
कालके स्वभाव	१५-१२
कर्म	१५ ४

जीवसमाप्त	१५-६
॥	१५ १०
दिनक सूर्य	१५-२४
दशसयत गुणस्थानमें व्युच्छिन्नयात्रा	१५ ८
प्रमाद	१५ १
पञ्चदशाक्षरमन्त्र	१४-१७
मध्यम नक्षत्र	१५-५
मध्यमनक्षत्राष्टिदेवता	१५-६
मौहनीयसत्त्वस्थानप्रकृति	१५ ७
योग	१५-२,
राजमान्यतानिमित्तक अदिमंत्र	१५ २०
रात्रिके सूर्य	१५-२५
श्रवणके अन्तराय	१५-१३
शत्रुवशीकरण शस्त्रनिष्फलीकरण मंत्र	१५-२२
शत्रुस्तमननिमित्तक अदि मंत्र	१५-१६
सप्रहिणी आदि पीडानिवारक अदिमंत्र	१५-२१
सम्पददृष्टिके ७ गुण	१५-३
संयुक्त शरीर	१५ २३
हिंसा प्रयोगक्रिया	१५-१५
घण्टक योग्य वस्तुतिका	
अस्तिगणमन्त्र मन्त्र	

धर्मद्रव्यके स्वभाव	१६-२१
अनिर्गतिहरणगुणस्थानमे अथवा	१६-३०
आकाशद्रव्यके स्वभाव	१६-२२
उत्पादन दोष	१६-३
उत्तमदोष	१६-२
क्रिया	१६-२८
वज्रपोषपत्र	१६-५
कपाय	१६-६
दुष्टलगिरिपरदृष्ट	१६-२६
दुष्टलगिरि कृष्णधीशदेव	१६-२७
ग्वर पृथ्वीके भाग	१६-१०
चन्द्रगुप्तके स्वप्न	१६-३५
जीवसमाप्त	१६-१८
"	१६-१६
तीर्थहरत्वभावना	१६-१
तीर्थ करकी माणके स्वप्न	१६-८
द्रव्यके विशेष गुण	१६-२३
धर्मद्रव्यके स्वभाव	१६-२०
नन्दननरापिना	१६-११
प्रसिद्ध सती	१६-७
भारत चक्रवर्तिके स्वप्न	१६-३८

मात्री उम्सपिणीमें कुलकर	१६-१२
भोगभूमिनमनुष्योंका आभरण	१६-२६
मम्यपाशदूरीकरण मंत्र	१६-३२
निःयात्रगुणस्थानमें बध्न्युच्छिन्नप्रकृति	१६-१३
योगमार्गणा	१६-१७
लौकान्तिकदेव	१६-८
अन्तर देवोंके इन्द्र	१६-३७
वैपाद्यगुण	१६-२५
स्वर्ग	१६-४
स्तर	१६-२४
मंस्कार	१६-३६
सत्त्व साम्परायम २धन्युच्छिन्नप्रकृति	१६-१४
सोलह अक्षर वाला मंत्र	१६-३१
हिंसा	१६-३८
वीणमोहमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृति	१६-१५
वीणमोहमें मत्तव्युच्छिन्न प्रकृति	१६-१६
अविर्बुधसम्पत्तमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृति	१७-२
कपायवेदनीयाश्रम हेतु	१७-८
जीन समाप्त	१७-११
पञ्चेन्द्रियके गुणस्थान	१७-१४
भयके	१७-१५

मनुष्यक गुणस्थान	१७-१०
मरण	१७-७१
मोहनीयसप्तदशार्णधस्थान प्रकृति	१७-५
॥	१७-६
आयु के नित्यनियम	१७-२
सयम	१७-१
सूक्ष्ममाप्परायमे वधयोग्य प्रकृति	१७-६
अशकुन	१८-१७
जीवसमास	१८-८
॥	१८-६
॥	१८-१०
दलधेशि	१८-७
दृष्टान्ताभास	१८-१८
दोष	१८-५
निपीधिका लक्षण	१८-१२
पञ्चेन्द्रियतिर्यग्जीव समास	१८-४
पाप	१८-६
लिपि	१८-१३
॥	१८-१४
॥	१८-१५
लेख्याने अञ्ज	१८-११

६ व्याधिशुभमपनिवारण श्रीप्रापक मन्त्र	१८-१६
७ बुद्धि श्रद्धा	१८-३
८ वेदनायाथव हेतु	१८-१
९ सापोपशमिक भाव	१८-२
१० समस्तमतगमपित्तन निमित्तमन्त्र	१९-४
११ बाव समाप्त	१९-१
१२ वैतक शायक	१९-५
१३ शान्तिवरणाथवहेतु	१९-२
१४ सर्वारिष्ट अंगपीडावारक श्रद्धामन्त्र	१९-३
१५ कुरुक्षेत्रजन्य व्याधि	२०-८
१६ कुण्डलगिरिपर कूट	२०-३
१७ वीरप्ररूपणा मुख्यस्थान	२०-६
१८ जीव समाप्त	२०-७
१९ पुण्यपापोभयप्रकृति	२०-११
२० मन्त्रनामिषोंके इन्द्र	२०-१४
२१ मननी शुद्धिके कारण	२०-१३
२२ विदेहविद्यमान तीर्थम्बर	२०-६
२३ श्रावकके उत्तमगुण	२०-२
२४ श्रुतज्ञान	२०-१
२५ समवसरणरचनामस्तु	२०-४
२६ समवसरणरचना भाग	२०-५

सतति श्रीमोमाग्यनिजयपुद्धिलामरा मत्र	२०-१०
चीणमोहमें भाव	२०-१०
उपशान्त मोहमें भाव	२१-६
और्दायकभाव	२१-२
चारित्रमोह क्षणिके अवसरमें स्मरण	२१-१३
जीवसमाप्त	२१-३
निग्रहस्थानके भेद	२१-१२
मोहनीयभीष्मविशतिग्रहस्थानभी प्रकृति	२१-४
"	२१-४
"	२१-४
"	२१-४
मोहनीयसप्तमसत्त्वस्थानप्रकृति	२१-१
यदिग्रहसुक्तिराजमयवारकः न	२१-१
संवाती प्रकृति	२१-१
सग्रहिणी आदि निवारकः न	२१-१
अनिवृत्तिस्मरणमें वधयोग्य प्रकृति	२१-१
अप्रमत्तनिरतमें आश्रय	२२-१
अपूर्णस्मरणमें आश्रय	२२-१
आह्वनीयेच्छापूर्वकमत्र	२२-१
जीवसमाप्त	२२
परीयहजय	२२

बौद्धिक अक्षरका मंत्र	२२-१४
" " का विद्यामंत्र	२२-१६
मोहनीयद्वामिश्रितन्यस्थान प्रकृति	२०-३
" " " " " " " " " " " "	२२-४
" " " " " " " " " " " "	२०-५
" " " " " " " " " " " "	२०-६
" " " " " " " " " " " "	२२-७
" " " " " " " " " " " "	२२-८
मोहनीयपष्टसत्त्वस्थान प्रकृति	२२-९
स्वधवर्गणा	२२-१
मूढमसांस्पायमे भाव	२०-१४
धन्यातीति	२२-३
लैवीम अक्षर वाला मंत्र	२३-४
मोहनीयपष्टसत्त्वस्थान प्रकृति	२३-२
वर्गणा	२३-१
विषमज्वरवारक मंत्र	२३-५
अग्रापणी पूर्वके चयन लेखिके कमप्रकृतिप्राभृतके	२३-१८
अर्थाधिकार	२४-२१
उत्तरप्रकृति स्थितिबंधके अनुयोगद्वार	२४-२०
एकैकोत्तर प्रकृतिबंधके अनुयोगद्वार	२४-२०
कामदेव	

गतचतुर्थकालमें तीर्थङ्कर

१	॥ कै चिन्ह	१
२	॥ पिता	२
३	॥ माता	३
४	॥ पूर्व तृतीय मरनाम	४
५	॥ पूर्व तृतीय मर पिताके न	५
६	॥ पूर्ववाम स्वर्गविमान	६
७	॥ समीपस्थ यद्य	७
८	॥ की माताके समीप रहने वाली	८

धीर्धीस अक्षरका अद्वि मत्र

जातिके दूषणामास	२३
जीरसमास	२४
प्रमत्तविरतमें आश्रय	२४
भारी उत्सर्पिणीमें तीर्थङ्कर	२४
भारी उत्सर्पिणीमें तीर्थङ्करोंके पूर्व तृतीय मरनाम	२४
भूतोत्सर्पिणीमें तीर्थङ्कर	२४
मोहनीयचतुर्थमक्षस्यान प्रकृति	२४-०
आश्रयक्रिया	२५-२
उच्चैर्गोत्राश्रयहेतु	२-
उपाध्यायके सर्वगुण	२५-१०
कषाय	२५-२

चारित्रमोहनीयप्रकृति	२५-१
नीचैर्गात्राश्रवहेतु	२५-८
पञ्चीस अक्षर वाला मन्त्र	२५-११
वर्गाक्षर	२५-५
विक्रया	२५-१२
सम्यक्स्त्वदोष	२५-६
सासादनर्मे बंधव्युच्छिन्न प्रकृति	२५-३
ज्ञानावरणाश्रवहेतु	२५ ७
कपाय मार्गणा	२६-२
गजमदधारण निमित्तयंत्र	२६-८
जीवसमास	२६-३
देशपाटी प्रकृति	२६ १
मनुष्यापुराश्रवहेतु	२६-५
मोहनीय तृतीय सत्त्वस्थान प्रकृति	२६ ४
शुशुस्तमन निमित्त मन्त्र	२६ ६
सर्वेशिरोरोग धारण निमित्त मन्त्र	२६-१०
संस्कार	२६-७
सान्निपातिक भाव	२६-६
इन्द्रिय विषय	२७-१
चौरमयनिगारणनिमित्त मन्त्र	२७-८
जीवसमास	२७-५

नक्षत्र

२७-३

मोहनय द्वितीय सत्त्वस्थान प्रकृति

२७-६

योग (ज्योतिषसम्बन्धी)

२७-४

स्वोदयवध्यमान प्रकृति

२७-२

सप्तविंशत्यक्षरमन्त्र

२७-७

अनिष्टचिह्नकरणमें भाव

२८-८

अपूर्वकरणमें भाव

२८-७

जोयसमाप्त

२८-३

नक्षत्र

२८-५

नामकर्मकी अपिण्ड प्रकृति

२८-१

प्रेतराधारारण निमित्त मन्त्र

२८-६

मोहनीय कर्मकी प्रकृति

२८-२

मोहनीय प्रथम सत्त्वस्थान प्रकृति

२८-४

शत्रुत्तमन निमित्त मन्त्र

२८-१०

साधुके मूलगुण

२८-६

मुषिक जातिके प्रसिद्ध बाजे जो तीर्थङ्करके जन्मोत्सवमें

द्वारा बजाये जाने हैं

२८-११

तिर्यग्युराश्रयहेतु

२८-२

धपको बजाये जाने वाले बाजे जो तीर्थङ्करके जन्मोत्सवपर

बजाये गये

२८-३

रत्नत्रयके अंग

२८-१

कर्मभूमिपतिर्यश्चैर्जीवसमाम	३०-५
जावसमाम	३०-२
५-६	३०-३
सुयोगकेरलीमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृति	३०-१
सुयोग भूमि	३०-४
अप्रमत्तविरतम भाव	३१-५
एकत्रिंशदक्षर मन्त्र	३१-६
दशसप्ततमें भाव	३१-३
प्रमत्तविरतमें भाव	३१-४
सुगण्डु घोदयव्युच्छिन्न प्रकृति	३१-१
राज्यवाग्विनय सौमाम्यनिमित्त मन्त्र	३१-७
शुभस्वप्न	३१-८
सौमर्म युग्मरूपेन्द्रक विमान	३१-२
कायोत्सर्गे दोष	३२-६
जीवमेंमाम	३२-३
निरंतरवर्ष्यमान प्रकृति	३२-२
भोजनांतराय	३२-४
व्यवहारमें आये हुए शिन्पीकार	३२-१०
वर्दनादोष	३२-५
विद्योन्त्र	३२-६
सम्यग्दिग्मेध्यात्वमें भाव	३२-८

सासादनेमे भाव	३२ ७
सान्तरध्वमान प्रकृति	३२ १
जीरममाम	३३ १
तंत्रनिमित्त मंत्र	३३ ४
नरकायुराश्रयेतु	३३-२
सर्पशिरारण्य तः कीलनानिमित्त मंत्रवर्ण	३३ ३
जीर ममाम	३४ २
वधापमरखस्थान	३४ ३
मिध्यात्वमे भाव	३४ ४
सान्तरचिनी प्रकृति	३४ १
खमोशर मंत्रके अक्षर	३४-१
पिशाचदिवारणनिमित्त मंत्र वर्ण	३४ २
भयरोगोपसर्गनिवारण निमित्त मंत्रवर्ण	३४ ३
अनिष्टविहरणमे सच्चव्युच्छिन्न प्रकृति	३६ १
अधिरत सम्पत्त्वमे भाव	३६-७
आचार्यके मूलगुण	३६-१
आचार्यके गुण	३६-४
"	३६ ८
"	३६ १०
जीरसमाप्त	३६ १
जीरसमाप्त	३६ १

निमोदके कारण	३६-१२
पृथ्वीकाय	३६-४
राग जो इन्द्रने तीर्थरकरके जन्मपर गाये	३६-११
सन्निपातिक माय	३६-६
अशुभनामरुग्माश्रव हेतु	३७-१
दशसंयतगुणस्थानमें आभय	३७-२
शञ्जाराधनहानिगारण निमित्त मंत्रवर्ण	३७-३
जीवसमास	३८-१
दुर्जनशरीररक्षजिह्वस्तम्भननिमित्त मंत्राक्षर	३८-३
सर्गारिष्टाह्न पीड़ा धारणनिमित्त मंत्राक्षर	३८-२
कायगुप्तिके अतिधार	३९-३
जीवसमास	३९-१
व्यवसायलामसौरव्यविजय निमित्त मंत्राक्षर	३९-२
षोडशविंशदक्षरद्विमंत्र	४०-४
पित्तकोपनरोज	४०-२
भारतमें ब्राह्मी निरुत्तलिपि	४०-३
राजा (जो प्रजाका पालन करे) के गुण	४०-४
समाध्यर्थज्ञेयवस्तु	४०-१
जीवपद (नामरुमोदयस्थानके)	४१-१
सान्तिपातिक माय	४१-२
जीवसमास	४२-१

दुर्भिक्षादिभय वारणनिमित्त मन्त्राक्षर

सयोग कवलीमें उदय योग्य प्रकृति

मिश्रगुणस्थानम आश्रय

रानमान्यतानिमित्त मन्त्राक्षर

शुभनामस्मृतिश्च हेतु

अन्तर्यामिन् हेतु

समुद्रभयवारणनिमित्त मन्त्राक्षर

मर्त्यपिपत्नीमरण निमित्त मन्त्राक्षर

जीवसमाप्त

अपरित सस्यवत् गुणस्थानमें आश्रय

आहार दोष

तीर्थस्नान अर्हन्तके मूलगुण

धनलामनिमित्तमन्त्राक्षर

सर्वभयवारणरानद्वाराधन लाम निमित्तमन्त्राक्षर

धनवर्धनी प्रकृति

सर्वभयवारण निमित्त मन्त्राक्षर

ज्ञानमात्रात्मासी प्रसिद्ध शक्ति

केवल पुण्य प्रकृति

जीवसमाप्त

दीक्षावध क्रिया

११-१०४
४२-३
४२-२
४३-२
४३-३
४३-१
४४-१
४४-३
४४-२
४५-३
४५-१
४६-३
४६-१
४६-२
४६-४
४६-५
४७-१
४७-३
४७-२
४८-४
४८-१
४८-२

मतिमानके भेद	४८-३
सम्पद्दष्टिके मूलगुण	४८-४
आग्नेयनाक्ष्ण्यमङ्ग	४९-२
उदररोग कारण निमित्त मन्त्राक्षर	४९-४
प्रत्याख्यान कल्पमङ्ग	४९-३
शत्रुकर्मण कल्पमङ्ग	४९-१
पुद्ग भयवारण निमित्त मन्त्राक्षर	५०-४
विनयार्थदक्षिणश्रेणिनगर	५०-१
सम्पत्त्वके मूल	५०-३
सोमोदेनमें आश्रय	५०-२
जीवसमाप्त	५१-१
सर्वसंक्रमण प्रकृति	५२-१
कर्मन्वय क्रिया	५३-३
जीवके भाव	५३-१
आयुष्की क्रियार्थ	५३-२
जीवममाप्त	५४-२
निरन्तर वधी प्रकृति	५४-१
मिथ्यात्वम आश्रय	५५-१
सम्पत्तिलाभ निमित्त मन्त्राक्षर	५५-१
आश्रय	५६-२
जीवसमाप्त	५७-१

नामदर्पपञ्चमसत्त्वस्थान प्रकृति	८८ १
नान्दर्म चतुर्थसत्त्वस्थान प्रकृति	८०-१
नान्दर्म तृतीयसत्त्वस्थान प्रकृति	८१-१
नान्दर्म द्वितीयसत्त्वस्थान प्रकृति	८२-१
नान्दर्म प्रकृति	८३-१
नान्दर्म प्रकृति	८३-२
नान्दर्म प्रकृति	८८ १-

१००-२

१००-१

~~नामदर्पपञ्चमसत्त्वस्थानमे उदय योग्य प्रकृति~~ १०० ३

~~नामदर्पपञ्चमसत्त्वस्थानमे उदय योग्य प्रकृति~~ १०१ ८

~~नामदर्पपञ्चमसत्त्वस्थानमे उदय योग्य प्रकृति~~ १०१-३

~~नामदर्पपञ्चमसत्त्वस्थानमे उदय योग्य प्रकृति~~ १०१-१६

~~नामदर्पपञ्चमसत्त्वस्थानमे उदय योग्य प्रकृति~~ १८

~~नामदर्पपञ्चमसत्त्वस्थानमे उदय योग्य प्रकृति~~

~~नामदर्पपञ्चमसत्त्वस्थानमे उदय योग्य प्रकृति~~

~~नामदर्पपञ्चमसत्त्वस्थानमे उदय योग्य प्रकृति~~

~~नामदर्पपञ्चमसत्त्वस्थानमे उदय योग्य प्रकृति~~

~~नामदर्पपञ्चमसत्त्वस्थानमे उदय योग्य प्रकृति~~

~~नामदर्पपञ्चमसत्त्वस्थानमे उदय योग्य प्रकृति~~

~~नामदर्पपञ्चमसत्त्वस्थानमे उदय योग्य प्रकृति~~

~~नामदर्पपञ्चमसत्त्वस्थानमे उदय योग्य प्रकृति~~

१०१-३६

१०१-४३

१०१-१५

१०१-१७

१०१-५४

१०१-२८

१०१-७

१०१-४६

१०१-४६

१०१-३७

१०१-४०

१०१-१४

१०१-२

१०१-४८

१०१-४

१०१-३०

१०१-११

१०१-१२

१०१-६

१०१-१०

१०१-३२

अग्निष्टोमं इन्द्रकथं शिवद्वयं

श्रेष्ठं शिवद्वयं

अग्निष्टोमं सम्यक्त्वमे उदय योग्य प्रकृति

सत्य योग्य प्रकृति

अग्निष्टोमं निष्ठितिकरणमे भाव प्रसार

अणु

अशोती

अशान्तमोदद्वितीयोपशममम्यक्त्वमे सत्य योग्य प्रकृति

आयिक सम्यक्त्वमे सत्य

क्रियायादियोक ठनाद

कर्मप्रकृति

गारा भूत क्षेत्रमें

द्वे जीवसमाप्त

देशसंयतमें सत्य योग्य प्रकृति

नामकर्मके अन्वयतरुयधर्मग

नामकर्मके २६ प्रकृत्युदयस्थानभग

निर्मितानिष्ठितिकरणमे भाव प्रकार

निर्मितानिष्ठितिकरणमे भाव प्रसार

अमतरितनमें सत्य योग्य प्रकृति

द्रुमत्तनिरतचायिकसम्यग्दृष्टिम सत्त्व योग्य प्रकृति	१०१
पाप	१०
पूजोकी वस्तुये	१०१
मिथ्यात्वमे बंधयोग्य प्रकृति	१०१
" उदयोग्य प्रकृति	१०१-१
" सत्त्व योग्य प्रकृति	१०१-२
मिश्रमे सत्त्व योग्य प्रकृति	१०१-२०
विद्विषा	१०१-४१
सर्ग जीवसमाम	१०१-१०
सवेदानिष्टुत्तिररुणमे मान प्रकार	१०१-६२
सासादनमे उदय योग्य प्रकृति	१०१-२३०
" बंधयोग्य प्रकृति	१०१-२११
" सत्त्वयोग्य प्रकृति	१०१-२६
सूक्ष्मसाम्परायउपशमरुद्धितीयोपशमसम्यक्त्वमे सत्त्वयोग्य प्रकृति	१०१-३६
" चायिकसम्यक्त्वमे सत्त्वयोग्य प्रकृति	१०१-४१
सूक्ष्म साम्परायउपशममे सत्त्वयोग्य प्रकृति	१०१-४४
सूक्ष्मसाम्परायमे मानप्रकार	१०१-१०
सूक्ष्मसाम्पराय सयमी	१०१-१६
चायिक सम्यक्त्वमे सत्त्वयोग्य प्रकृति	१०१-२६
चायिकसम्यग्दृष्टिदेशमयतमे सत्त्वयोग्य प्रकृति	१०१-३१

संशोध सन्तपोष्य	१०१ ४५
अन्यामूर्तिशान्तिरुद्ध	१०२ ११०
आत्मशिव इन्द्रक सामानिक	१०२-६५
अन्यशिव इन्द्रके सामानिक	१०२-७४
अन्यामूर्तिशान्तिरुद्ध	१०२-३२
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२ ८
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२ ६४
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२-७३
अन्यामूर्तिशान्तिरुद्ध	१०२-११५
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२-५
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२-११६
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२-१२६
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२-१५२
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२-१३२
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२-१६५
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२-१०८
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२-१३६
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२-१४०
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२-१२२
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२ १४७
अन्यशिव इन्द्रक सामानिक	१०२-११२

घोष इन्द्रके सामानिक	१०२ ६२
चक्राके म्लेच्छराजा	१०२-६१
" मुकुटेश्वरराजा	१०२ ६२
" नाट्यशाला	१०३ ६३
" संगीतशाला	१०२ ६४
" देश	१०२ ६५
" नगर	१०२ ६६
" खेद	१०२ ६७
" कर्बट	१०२-६८
" मटम्य	१०२ ६९
" पट्टन	१०२ १००
" द्रोणमुग	१०२-१०१
" सेरादल	१०२-१०२
" दुर्ग	१०२ १०३
" पुवती	१०२-१०४
" स्त्रीमे रानकन्या	१०२-१०५
" " विद्याधर कन्या	१०२-१०६
" " म्लेच्छ कन्या	१०२-१०७
चन्द्रबाह्मदेव	१०२-१०८
चन्द्राभ लोकान्तिक देव	१०२-१०९
चमरन्द्रके सामानिक	१०२-११०

चमरेन्द्रके	आदिमपरिपद	१०२-३६
"	मध्यमपरिपद	१०२-३७
"	नाश परिपद	१०२-३८
"	प्रत्यग्र परिवार देवी	१०२-३९
"	सर्पपरिवारदेवी	१०२-४०
"	बन्लमा	१०२-४१
"	सर्वदेवी	१०२-४२
"	समानिवासी	१०२-१४५
"	जलप्रमके सामानिक	१०२-६१
"	जलगन्तके सामानिक	१०२-७०
"	तारकाबाहकदेव	१०२-१४६
तुपित लौकान्तिरुद्व		१०२-११४
दिगन्तरचित लौकान्तिरु		१०२-१२४
देशसयतमें भावप्रकार		११२-६
धम्मा पृथ्वीमे इन्द्रकथे शिबद्वविल		१०२-२४
" केवल श्रे शिबद्वविल		१०२-२८
घरगानद इन्द्रके सामानिक		१०२-६७
" की बन्लमादि		१०२-८३
नवप्रमाहरुदेव		१०२-१४८
नामकर्मके ४धे गुणस्थानमें भुजाभारवधमग		१०२-१६
" २८ प्रकृत्युदयस्थान मग		१०२-२०

सामकर्मके २६ प्रकृत्युदयस्थान भोग	१०२-२१
" ३० "	१०२-२२
" ३१ "	१०२-२३
निर्माणरज लौकान्तिक	१०२-१०३
प्रतीन्द्रोंकी वल्लभा व देवी	१०२-८७
प्रथमानुयोगमें पद	१०२-१३५
प्रमंजन इन्द्रके सामानिक	१०२-७५
प्रमत्तविरतमे भावप्रकार	१०२-७
प्रमाद	१०२-१
परिहारविशुद्धिसंयमी	१०२-१३१
पूरोंके प्रामृतक	१०२-१३८
पह्लि नामक लौकान्तिक	१०२-१०६
भयनयासिके तृतीयेन्द्रकी पहिली वच सेना	१०२-१५३
" शेष १७ इन्द्रकी प्रत्येयकी "	१०२-१५४
भूतानन्द इन्द्रके सामानिक	१०२-५१
" आदिमपरिपद	१०२-५२
" मध्यमपरिपद	१०२-५३
" बाह्यपरिपद	१०२-५४
" प्रत्यग्रपरिवारदेवी	१०२-५५
" सर्वपरिवारदेवी	१०२-५६
" वल्लभा	१०२-५७

भूतानन्द इन्द्रके सर्वदेवी	१०२-५८
भयतवासिके १७ इन्द्रोके आदिमपरिपद	१०२-७६
" " मध्यमपरिपद	१०२-७७
" " वाद्यपरिपद	१०२-७८
" " प्रत्यग्रपरिवारदेवी	१०२-७९
" " सर्पपरिवारदेवी	१०२-८०
" " वल्लभा	१०२-८१
" " सर्वदेवी	१०२-८२
मधुमीम सप्त्यात योजन विस्तृत बिल	१०२-३३
" " अथमयख्यात " " "	१०२-३४
मरुत लौकान्तिकदेव	१०२-१२७
महाघोष इन्द्रके सामानिक	१०२-७१
मिथ्यात्वमे' भावप्रकार	१०२-२
मिथमे भावप्रकार	१०२-४
मेघापृथ्वीमे इन्द्रके अथिन्द्रपिल	१०२-२६
" " केवल " " "	१०२-३०
मोहनीयके उदयस्थान मंग	१०२-६
मोहनीयके उदयके सर्वविध प्रकृति प्रमाण	१०२-१०
मोहनीयके योगके आथय स्थानमंग	१०२-११
" " " " प्रकृतिप्रमाण	१०२-१२
" " " " मयमेके आथय स्थान मंग	१०२-१३

"	"	प्रकृतिप्रमाण	१०२-१४
"	"	लेख्याकेआश्रय स्थानमग	१०२-१५
"	"	प्रकृतिप्रमाण	१०२-१६
"	"	सम्यक्त्वके आश्रय स्थान मग	१०२-१७
"	"	प्रकृतिप्रमाण	१०२-१८
ल	व्यपसिद्धके भव		१००-१३६
लोकपालो	(भजनमा-१) की वन्तमा व देवी		१०२-६०
वशिष्ट इन्द्रके सामानिक			१०२-६६
वसुलौकान्तिकदेव			१०२-१२८
विश्वलौकान्तिकदेव			१०२-१३०
धृषमेष्टलौकान्तिक			१०२-१२१
वशामे इन्द्रके श्रेष्ठिपदपिल			१०२-२५
वशामे कनल	" "		१०२-२६
वैरोचन इन्द्रके सामानिक			१०२-४३
वैरोचन इन्द्रके आदिम परिपद			१०२-४४
"	मध्यम परिपद		१०२-४५
"	बाह्य परिपद		१०२-४६
"	प्रत्यग्रपरिवारदेवी		१०२-४७
"	सर्वपरिवारदेवी		१०२-४८
"	वन्तमा		१०२-४९
"	सर्वदेवी		१०२-५०

वेणुदेवइंद्रके सामानिक	१०२ ५६
वेणुधारी इंद्रके सामानिक	१०२-६८
वेणुवणुधारी इन्द्रोक्त प्रत्यग्रव भवपरिवारदेवी	१०२ ८४
वन्तमा	१०२ ८५
सर्पदेवी	११२ ८६
बेलम्ब इन्द्रके सामानिक	१०२ ६६
बैरोचनेन्द्रके समानिपामी	१०२-१५६
भयस्कर लौकान्तिकदेव	१०२-११६
शील	१०२ १३७
स्यानाहम पद	१०२-१३४
सत्यामलौकान्तिकदेव	१०२ ११८
सर्वनरकोंमें इंद्रवशेषियद्वितिल	१०२ २७
केवल	१०२-३१
सर्वरक्षित लौकान्तिक देव	१०२-१२६
सामानिकी की [भगनयासी] वन्तमा व देवी	१०२ ८८
सारस्वत लौकान्तिक	१०२-१०७
सासादनम भावप्रकार	१०२-३
सूर्यवाहकदेव	१०२-१४६
सूर्यामलौकान्तिक देव	१०२-११३
सुनकृतागर्भ पद	१०२-१३३
हरीकान्त इन्द्रके सामानिक	१०२ ७२

हिमवान् पर्यंतपर तारा	-	१०२-१५०
हैमवत क्षेत्रपर तारा	,	१०२-१५१
हरिपेशइन्द्रके सामानिक	-	१०२-६३
घण्टा संख्या	,	१०२-१४३
"	-	१०२-१४४
घण्टा श्रेणिके गुणस्थानो म सयमी	,	१०२-१४१
"	,	१०२-१४२
घेमकर लीकान्तिक		१०२-१२०
ग्रायस्त्रिणो [मयनगामी] की वल्लभा व देवी		१०२-८६-
अग्निहमारो के भवन	-	१०३-३२-
अग्निगिरी इन्द्रके अधिकृत भवन	-	१०३-४२
" " तनुरक्षक	-	१०३-६६-
अग्निगह्वरे अधिकृत भवन	-	१०३-५२
" " तनुरक्षक	-	१०३-७५-
अञ्जनामे प्रतीर्णकविल	-	१०३-५
" " सुनविल	-	१०३-११-
" " असरयात योजनकेविल	-	१०३-२२-
अन्त कदशागके पद		१०३-८७-
अनुत्तरोपपादिकदशागके पद	-	१०३-८८-
अमितगति उट्टके अधिकृत भवन	-	१०३-४१-
" " तनुरक्षक	-	१०३-६५-

अमिर्ताशनके अधिकृत भवन	१०३-५१
" तनुरचक	१०३-७४
अरिष्टमि प्रसीर्णविल	१०३-४
" मर्वविल	१०३-१०
" सरयातयोननके विल	१०३-१७
" अमरस्यातयोननके विल	१०३-२१
अस्तिनास्ति प्रगाद पूर्वके पद	१०३-६८
अमुरष्टमार देवो के भवन	१०३-२४
आग्रायणी पूर्वके पद	१०३-६६
आनत प्राणतेन्द्रो के प्रति सैन्य गज	१०३-१०८
आरण्यान्नुतेन्द्रो " " "	१०३-१०६
उदधिदुमारो के भवन	१०३-२८
उपामराध्ययनाङ्गके पद	१०३-८६
घोषमनेन्द्रके अधिकृत भवन	१०३-३०
" " तनुरचक	१०३-६३
चक्रवर्तीके हाथी	१०३-७८
" रथ	१०३-७८
" ग्राम	१०३-७८
चन्द्रप्रवर्तिके पद	१०३-७८
चमरेन्द्रके अधिकृत भवन	१०३-७८
" तनुरचक	१०३-७८

चमरेन्द्रके एवैस्तेना	१०३-५५
जम्बूद्वीप प्राप्ति के पद	१०३-६२
जलरान्तरे अधिकृत भवन	१०३-४८
" तनुरधक	१०३-७१
जलप्रभके अधिकृत भवन	१०३-३८
" तनुरधक	१०३-६२
द्वीपद्वारो के भवन	१०३-२७
द्वीपमागर प्राप्ति के पद	१०३-६३
द्विक्कमारो के भवन	१०३-३१
धम्मामे प्रदीर्घक विल	१०३-१
" सर्पविल	१०३-७
" सरयातयोजन विस्तृतविल	१०३-१४
" असरयातयोजन विस्तृतविल	१०३-१८
धर्मकथाङ्गके पद	१०३-८५
धरणाानन्दके अधिकृत भवन	१०३-४५
" तनुरधक	१०३-६८
नागकुमारदेवो के भवन	१०३-२५
प्रत्याख्यानपूर्वके पद	१०३-६६
प्रभजनके अधिकृत भवन	१०३-५३
" तनुरधक	१०३-७६
प्रदनव्याकरणाङ्गके पद	१०३-८६

पूर्णभुवनेन्द्रके अधिकृतभवन	१०३-३७
" " तनुरचक्र	१०३-६१
महेन्द्रके प्रतिमैन्यगज	१०३-१०४
बैलम्ब इन्द्रके अधिकृतभवन	१०३ ४३
" तनुरचक्र	१०३ ६७
वैरोचन इन्द्रके अधिकृत भवन	१०३ ४४
" तनुरचक्र	१०३-५६
" एकैकसेना	१०३ ५७
भवननामीके शेष इन्द्रोंकी एकैकसेना	१०३-७७
भूतानन्दके अधिकृत भवन	१०३-३५
" तनुरचक्र	१०३-५८
" एकैकसेना	१०३ ५६
महाघोषके अधिकृतभवन	१०३-४६
" " तनुरचक्र	१०३-७०
महेन्द्रक प्रतिमैन्यगज	१०३-१०३
मेघामे प्रतीर्णक बिल	१०३ ३
' मरु बिल	१०३ ८
" सख्यात योजन के बिल	१०३-१६
" असख्यात योजन के बिल	१०३-२०
यथाग्यात समयी	
व्याख्याप्रज्ञप्तिग्रन्थके पृ	

व्याम्याप्रति दृष्टिवादाधिसारके पद	१०३-६४
वशिष्ट इन्द्रके अधिकृतभवन	१०३-४७
” तनुरवक	१०३-७०
लान्तरेन्द्रके प्रतिमैन्यगन	१०३-१०५
वंशामें प्रकीर्णनिल	१०३-२
” सर्व निल	१०३-८
” सखातयोजनके निल	१०३-१५
” असखातयोजनके निल	१०३-१६
वायुमारोके भवन	१०३-३३
निबुत्कुमारोंके भवन	१०३-३०
वीर्यप्रसादके पद	१०३-६७
वेणुके अधिकृत भवन	१०३-३६
वणुगारीके अधिकृत भवन	१०३-४६
” तनुरवक	१०३-६६
वेणुदेवके तनुरवक	१०३-६०
शतारेन्द्रके प्रतिमैन्यगन	१०३-१०७
शुक्रेन्द्रके प्रतिमैन्यगन	१०३-१०६
स्तनित कुमारोंके भवन	१०३-२६
”न्द्रके	१०३-१००
	१०३-८३
	१०३-१००

सयोगीजिन	१०३-१०१
मर्ग पृथ्वीमें प्रकीर्णक विल	१०३-६
" " सर्ग विल	१०३-१२
" " असख्यातयोजनके विल	१०३-२३
सख्यातयोजन निस्तृत विल	१०३ १३
संसार की जीवों की योनि	१०३ ८१
गुणार्णवदेवोंके भवन	१०३ २६
सूर्य प्रहसिके पद	१०३ ६१
सूर्यदृष्टिवादाधिकारके पद	१०३ ६५
हरिकान्तक अधिष्ठितभवन	१०३-५०
" तनुरक्षक	१०३ ७३
हरिपेश इन्द्रके अधिकृतभवन	१०३-४०
" " तनुरक्षक	१०३-६४
अग्निवाहन इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-२२
अग्निशिखि इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-१३
अप्रमत्तगुणस्थानरती जीन	१०४-५७
" " " " " " " "	१०४ ५८
अमितगति इन्द्रकी सर्वसेना	१०४ १२
अमितवाहन इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-२१
आकाशगता चूलिकामें पद	१०४ ५०
आत्मप्रवादमें पद	१०४ ४५

ईशानेन्द्र हे प्रतिमैन्यपद	१०४-६४
उत्पत्तपूवम पद	१०४ ४२
एनादश अङ्गोम मर्षपद	१०४ ३३
क्रियाविशालम पद	१०४-५०
कर्मप्रसादम पद	१०४ ४६
कन्याणयादम पद	१०४ ४८
घोषरी मर्षसेना	१०४-१०
चक्रवर्तीका बंधुकुल	१०४ २४
” की गाये	१०४ २५
” ” याली	१०४-२६
” के अश्व	१०४-२७
” ” उत्तमरीर	१०४ २८
” ” पदाति	१०४-२६
चमरेन्द्ररी मर्षसेना	१०४-४
चतुर्दश पूराम पद	१०४-३५
चूलिकाभामे मर्षपद	१०४-३१
छेनोपस्थापना संयमी	१०४-४१
जलकान्त इन्द्ररी मर्षसेना	१०४-१८
जलगता चूलिकामे पद	१०४-३६
जलग्रभ की मर्षसेना	१०४-६
ताल	१०४-६६

दशमं पत मनुष्य	१०४ ५२
घरणानंद इन्द्रकी सर्व सेना	१०४ १५
प्रमत्तगुणभानवर्ती जीव	१०४-५५
" "	१०४-५६
प्रमत्तन इन्द्रकी सर्वसेना	१०४ २३
प्राणनाम पद	१०४-४६
परिकर्ममें पद	१०४ ३४
मननमात्रियोंके भवन	१०४ ३
भूतानंदकी सर्वसेना	१०४ ६
मन पर्ययज्ञानीजीव	१०४-६१
महाघोष इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-१६
मायागता चूलिकामें पद	१०४ ३८
मिथ्यात्वमें भुजसारबंध	१०४ १
रूपगता चूलिकामें पद	१०४-३६
वशिष्ट इन्द्रकी सर्वसेना	१०४ १७
वादिग्र	१०४-६७
विद्यानुवादमें पद	१०४-४७
विपाकसूत्रमें पद	१०४-३२
वेणुकी सर्वसेना	१०४ ७
वेणुधारी इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-१६
वेलम्प इन्द्रकी सर्वसेना	१०४ १४

उत्तेजनही सर्वमेना	१०७ ५
स्थलगता चूलिहामें पद	१०४ ३७
मत्स्यप्रवादमें पद	१०४ ४४
मर्त्य अप्रमत्तमयमी जीव	१०४ ६०
सर्व मयमी जीव	१०४ ५६
मय, स्वर	१०४ ६५
सामायिक छोटोपस्थापना मयमी	१०४ ६२
सामायिक सयमी	१०४ ३०
सामादनम अल्पतर धंधमंग	१०४ २
सामादनवर्ती मनुष्य	१०४-५३
" "	१०४ ५४
सौधर् इद्रके प्रतिमैन्यगज	१०४ ६३
हरिमान् इन्द्रकी मयसेना	१०४ २०
हरिपेश की मयसेना	१०४ ११
जिलाइविन्दुगात्र पद	१०४ ५१
ज्ञानश्रमात्में पद	१०४ ४३
अमयत मय्यगृहि मनुष्य	१०५ ३
कुल (जीवोंके देहक कुल)	१०५ १
मध्यमपदके वर्ण	१०५-२
मिश्रगुणस्थानवर्ती मनुष्य	१०५ ४
" "	१०५ ५

अदाताम अदापन्य	१०६ २
अनर्पिणीम मागर	१०६ ५
अनर्पिणीम मागर	१०६-४१
अदाताम उदार दन्य	१०६-
अनर्पिणीम मागर	१०६ १
अनर्पिणीम इल	१०६-
अनर्पिणीम	१०७-१
" "	१०७ ५
अनर्पिणीम मिथ्यादृष्टि	१०७-२
मिथ्यादृष्टि मानुषी	१०७ ३
सर्वाथमिद्विमानसामादय	१०७ ४
अग्निरपि	१०८ ८८
अज्ञानापूर्वामि नारकी	१०८ १२
अनुमप मन्थयोगी	१०८-१२७
"वचन योगी	१०८-१३४
अनुदिशविनयादि चारम देव	१०८-७०
अपराधपि	१०८ ८९
अपराधपन्थेन्द्रियतिर्यञ्च	१०८-४
अपराधमनुष्य	१०८ ५१
अरिष्टा पृथ्वीमे नारकी	१०८ १३
अश्रितानी	१०८ १४३

अधिदर्शना	१०८-१४३
अविरतसम्यग्दृष्टि	१०८-४
असत्यमनोयोगी	१०८-१२५
आनतप्राणतारण्यु ग्रैवेयवासी देव	१०८-६६
उपशमसम्यग्दृष्टि	१०८-१५१
उभयमनोयोगी	१०८-१२६
उपर (दूसरेसे ऊपर) के स्वर्गोद्गी देवियोंमें मिथ्यात्व रहित देविया	१०८-४०
चतुरिन्द्रिय	१०८ ७७
॥ पर्याप्त	१०८ ७८
॥ अपर्याप्त	१०८ ७९
चक्षुदर्शनी	१०८-१४४
॥ कालमुखेन	१०८-१४५
॥ क्षेत्र मुखेन	१०८-१४६
ज्योतिष्क देव	१०८ ५६
विर्यज्ज्वोमे सासादन सम्यग्दृष्टि	१०८ १६
॥ मिश्र	१०८-२०
॥ अनिरतसम्यग्दृष्टि	१०८-२१
तीर्थ करके जन्मोत्पत्तपर सौधस्वर्गमें सम्मिलित 'देव	१०८-१५३
तेजोलेश्या वाले जीव	१०८ १३५

[illegible]

पञ्चेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि तिर्यन्व	१०८ ४१
" " कालमुखेन	१०८ ४२
" " क्षेत्रमुखेन	१०८ ४३
पद्मलेस्या बाले जीव	१०८-१४६
पु वेदी	१०८-१३८
पृथ्वीकायिक	१०८-८६
वाटर पृथ्वीकायिक	१०८ ६०
" जलकायिक	१०८ ६१
वाटर अग्निकायिक	१०८ ६२
" वायुकायिक	१०८ ६३
" वनस्पतिकायिकप्रत्येक	१०८ ६४
" अपर्याप्त पृथ्वीकायिक	१०८ ६५
" " वायुकायिक	१०८ ६६
" " वनस्पतिप्रत्येक	१०८ ६७
वाटर पर्याप्त पृथ्वीकायिक	१०८ ११०
" " " कालमुखेन	१०८-१११
" " " क्षेत्रमुखेन	१०८ ११२
" " जलकायिक	१०८ ११३
" " वनस्पतिकायिक प्रत्येक	१०८ ११४
" " अग्निकायिक	१०८-११५
" " वायुकायिक	१०८ ११६

वातर पर्याप्ति वायुभायिक कालमुखेन	१०८-११९
" " " क्षेत्रमुखेन	१०८-११८
मवनवासी देव	१०८-५७
" " कालमुखेन	१०८-५८
" " क्षेत्रमुखेन	१०८-५६
मवनवामिर्योमि सासादन सम्यग्दृष्टि	१०८-३१
" मिश्र	१०८ ३२
" असयत सम्यग्दृष्टि	१०८ ३३
" मिथ्यादृष्टि	१०८-६०
मघरी पृथ्वीमे नारकी	१०८-१४
मतिनानी	१०८-१४०
मनोयोगी	१०८ १२३
माघवी पृथ्वी (७ वें नरक) में नारकी	१०८ १५
मिथ्यादृष्टि नारकी	१०८-७
" कालमुखेन	१०८ ८
" " क्षेत्रमुखेन	१०८ ६
मिथ्यादृष्टि मनुष्य	१०८-४८
" " कालमुखेन	१०८ ४८
" " क्षेत्रमुखेन	१०८-५०
मिथ्यादृष्टि देव	१०८-५१
मेघा पृथ्वीमें नारकी	१०८-११

योनिमती पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोर्मि सासादन	१०८ २८
" " " मिथ	१०८ २६
" " " अप्रित सम्पद्दष्टि	१०८ ३०
योनिमती पञ्चेन्द्रिय मिथ्यादष्टि	१०८ ४४
" " " कालमुखेन	१०८-४५
" " " क्षेत्रमुखेन	१०८ ४६
व्यंतर देव	१०८ ६१
" कालमुखेन	१०८ ६२
" क्षेत्रमुखेन	१०८ ६३
व्यंतरोर्मि सासादन सम्पद्दष्टि	१०८ ३४
व्यंतरोर्मि मिथ	१०८ ३५
" असयत्त सम्पद्दष्टि	१०८ ३६
" मिथ्यादष्टि	१०८ ६४
वचनयोगी	१०८ १३१
" कालमुखेन	१०८ १३२
" क्षेत्रमुखेन	१०८ १३३
वंशा पृथ्वीमि नारकी	१०८-१०
वायुकायिक	१०८ ८६
विकलत्रय कालमुखेन	१०८ ८०
" क्षेत्रमुखेन	१०८-८१
विभंग मानी	१०८-१३६

वेदक सम्यग्दृष्टि	१०८-१५०
वैक्रियक साधयोगी	१०८-१३५
• मिथकाय योगी	१०८-१३६
श्रुत ज्ञानी	१०८-१४१
शुक्ल लेश्यावाले जीव	१०८-१४८
स्त्री वेदी	१०८-१३७
सम्यगनोयोगी	१०८-१२४
सनत्कुमारसे सहस्रारतक के देव	१०८-६८
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	१०८-३
संज्ञी जीव	१०८-१५२
सर्वनारकी	१०८-६
साक्षादन सम्यग्दृष्टि	१०८-२
सूक्ष्म पृथ्वीसायिक	१०८-६८
• जलसायिक	१०८-६६
• अग्निसायिक	१०८-१००
• वायुसायिक	१०८-१०१
• पर्याप्त पृथ्वीसायिक	१०८-१००
• " जलसायिक	१०८-१०३
• " अग्निसायिक	१०८-१०४
• " वायुसायिक	१०८-१०५
• अपर्याप्त पृथ्वीसायिक	१०८-१०६

योनिमती पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोमे सासादन	१०८-३
” ” ” मिथ	१०८-३
” ” ” अपिरित सम्यग्दृष्टि	१०८ -
योनिमती पञ्चेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि	१०८
” ” ” कालमुखेन	१०८-
” ” ” क्षेत्रमुखेन	१०८-
न्यंतर देव	१०८
” कालमुखेन	१०८
” क्षेत्रमुखेन	१०८
न्यंतरोमे सासादन सम्यग्दृष्टि	१०८
न्यंतरोमे मिथ	१०८
” असयत सम्यग्दृष्टि	१०
” मिथ्यादृष्टि	१०
वचनयोगी	१०८
” कालमुखेन	१०८
” क्षेत्रमुखेन	१०८
वंशा पृथ्वीमे नारकी	१ १/२
वायुकायिक	१
विकलत्रय कालमुखेन	१५
” क्षेत्रमुखेन	१०
विभंग क्षानी	१० १/२

चन्द्र मन्त्रगण्डवि	१०८ १३०	
चैतन्यक कापयोगी	१०८ १३५	
मिश्रकाय योगी	१०८ १३६	०-५७
श्रुत शानी	१०८ १४१	०-१४
शुक्ल क्षेत्रयावाले जीव	१०८ १४२	०-१५
स्वा रदी	१०८ १४७	०-१६
सपमनोयोगी	१०८ १४८	२२
सुनकुमारमे महस्मारतक क देव	१०८ १४९	२५
सम्पत्तिध्यावष्टि	१०८ १५०	२६
सर्वी वाव	१०८ १५१	२७
सर्वनारकी	१०८ १५२	२८
समादन सम्पत्ति	१०८ १५३	२९
सप्त पृथ्वीकायिक	१०८ १५४	३०
ललायिक	१०८ १५५	३१
अग्निकायिक	१०८ १५६	३२
वायुकायिक	१०८ १५७	३३
पर्याप्त पृथ्वीकायिक	१०८ १५८	३४
ललायिक	१०८ १५९	३५
अग्निकायिक	१०८ १६०	३६
वायुकायिक	१०८ १६१	३७
अपर्याप्त पृथ्वीकायिक	१०८ १६२	३८

तिर्यञ्चमिध्यादष्टि	११०-७
नपुंसक चेदी	११०-३८
निगोद जीव	११०-२०
नील लेख्या वाले जीव	११०-५१
बादर एकेन्द्रिय	११०-११
" " पर्याप्त	११०-१२
" " अपर्याप्त	११०-१३
" वनस्पति कायिक	११०-२१
" पर्याप्त वनस्पति कायिक	११०-२३
" अपर्याप्त वनस्पति कायिक	११०-२४
" निगोद	११०-२७
" पर्याप्त निगोद	११०-२६
" अपर्याप्त निगोद	११०-३०
मज्ज जीव	११०-५३
मस्ती जीव	११०-४०
माधारी जीव	११०-४१
मिध्यादष्टि	११०-१
" बालमुत्पेन	११०-२
" क्षेत्रमुत्पे	११०-३
लोभी जीव	११०-४२
वनस्पति कायिक	११०-१६

वनस्पतिकायिक व निगोदादि १४ शास्त्र

"

"

सञ्चितमार्माणिकाययोगो

सूक्ष्मएकेन्द्रिय

" " पर्याप्त

" " अपर्याप्त

" वनस्पतिकायिक

" पर्याप्त वनस्पति कायिक

" अपर्याप्त "

सूक्ष्मनिगोद

" पर्याप्त निगोद

" अपर्याप्त "

कायिक सम्पद्दष्टि जीव

११० ११

११० ११

११० ११

११० ११

११० ११

११० ११

११० ११

११० ११

११० ११

११० ११

११० ११

११० ११



संवाधकार, मुद्रित

श्री सहजानन्द शास्त्रमाला
(६)

समस्थानसूत्रविषयदर्पण

लेखक —

माध्यात्मिक सन्त, शास्त्रमूर्ति, जायतीर्य पूज्य श्री १०५ तुलक
यही मनोहर जी 'सहजानन्द' महाराज

संस्थापक —

रत्नलाल जैन एम० बी०

मेरठ सदर

प्रकाशक —

भत्री, श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

{ य० स० २०११ } योर निर्वाण स० २४८० [१० १६२४
प्रथम संस्करण } [मूल्य ॥८०]

इस पुस्तक की १० प्रति खरीदने पर १ प्रति बिना मूल्य